

खेती संदेश

Postage Registered No. PB/PTA/0339/2025-2027

WEEKLY KHETI SANDESH

E-mail : khetisandesh2025@gmail.com

Chief Editor : Parminder Kaur • RNI - PBBIL/25/A0210 • Issue Dt. 27-04-2026 • Vol.2 No.17 • H.O. : # 9-A, Ajit Nagar, Patiala-147001 (Pb.) • M. 90410-14575 • Page 12

देश में रबी फसलों की 81.69 प्रतिशत कटाई पूरी

ओडिशा, छत्तीसगढ़ और मिजोरम में मिट्टी में नमी 10 साल के औसत से कम

देश की कृषि व्यवस्था इस साल मानसून के आने से पहले ही असामान्य रूप से मजबूत स्थिति में खड़ी है। जलाशयों में औसत से कहीं अधिक पानी है। 90 प्रतिशत से ज्यादा भूजल केंद्र सामान्य स्तर पर है और कुछ राज्यों को छोड़कर मिट्टी में जड़ों तक पर्याप्त नमी बनी हुई है। यह सभी संकेत देते हैं कि खरीफ सीजन की शुरुआत मजबूत आधार पर हो सकती है। लेकिन इसी तस्वीर के बीच बढ़ता तापमान और लू की चेतावनी एक अहम जोखिम के रूप में उभर रही है, जो इस संतुलन को बिगाड़ सकती है।

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के क्रॉप वेदर वाच ग्रुप की 20 अप्रैल को जारी साप्ताहिक रिपोर्ट में सबसे मजबूत संकेत जलाशयों से मिलते हैं। केंद्रीय जल आयोग के मुताबिक, 16 अप्रैल 2026 को देश के 166 प्रमुख जलाशयों में 78.481 अरब घन

मीटर (बीसीएम) पानी दर्ज किया गया, जो इनकी कुल 183.565 बीसीएम क्षमता का 42.75 प्रतिशत है। यह स्तर पिछले साल के मुकाबले 16.25 प्रतिशत और पिछले दस साल के औसत से 27.20 प्रतिशत अधिक है।

स्थिति की मजबूती इस बात से भी साफ होती है कि 166 में से 150 जलाशयों में पानी सामान्य स्तर के 80 प्रतिशत से ऊपर है, जबकि केवल 6 जलाशय ही 50 प्रतिशत से नीचे हैं। यानी मानसून से पहले ही देश के अधिकांश बड़े बांध भरे हुए हैं।

भूजल के आंकड़े भी इसी सकारात्मक रुझान को आगे बढ़ाते हैं। जनवरी 2026 के डेटा के अनुसार, देश के 90.30 प्रतिशत निगरानी

केंद्र सामान्य स्थिति में हैं। इनमें से 75.8 प्रतिशत स्टेशनों पर जलस्तर जमीन से 10 मीटर के भीतर है,



जिससे सिंचाई के लिए पानी निकालना आसान बना हुआ है। इतना ही नहीं, करीब 70 प्रतिशत केंद्रों में भूजल स्तर 2016-2025 के दशकीय औसत से बेहतर दर्ज किया गया है।

हालांकि, पश्चिमी राजस्थान, पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ में जलस्तर 20 मीटर से नीचे जा चुका है, जो नकारात्मक जल संतुलन का संकेत देता है। पूर्वोत्तर और पहाड़ी राज्यों के कुछ हिस्सों में भी स्थानीय गिरावट दर्ज की गई है।

मिट्टी की नमी के स्तर इस समय खेती के लिए अनुकूल स्थिति को और मजबूत करते हैं। 10 से 16 अप्रैल 2026 के बीच उपग्रह आधारित आंकड़े दिखाते हैं कि राजस्थान से लेकर पूर्वोत्तर तक, देश के अधिकांश कृषि क्षेत्रों में जड़ क्षेत्र की नमी पिछले दस साल के औसत के बराबर या उससे बेहतर है। इसका सीधा मतलब है कि फसलों की

जड़ों तक पर्याप्त पानी उपलब्ध है। हालांकि ओडिशा, छत्तीसगढ़ और मिजोरम के कुछ हिस्सों में यह स्तर औसत से नीचे रहा, जहां सिंचाई पर अतिरिक्त निर्भरता बढ़ सकती है।

फसलों की प्रगति फिलहाल संतुलित है। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अनुसार, 17 अप्रैल 2026 तक रबी फसलों की 81.69 प्रतिशत कटाई पूरी हो चुकी है। तिलहन की 98.41 प्रतिशत और सरसों की 100 प्रतिशत कटाई हो चुकी है। दलहन 97 प्रतिशत पर हैं। जिसमें चना 98, उड़द 98 और मूंग 82 प्रतिशत कटाई हुई है। गेहूं की कटाई 75 प्रतिशत तक पहुंची है, लेकिन पंजाब (30 प्रतिशत), हरियाणा (65 प्रतिशत) और उत्तर प्रदेश (70 प्रतिशत) में अभी भी बड़ा हिस्सा खेतों में है।

देश में जून से सितंबर के दौरान 80 सेंटीमीटर बारिश होने की संभावना दक्षिण-पश्चिम मौनसून की बारिश सामान्य से कम रहने का अनुमान

भारत मौसम विज्ञान विभाग (आई.एम.डी.) ने कहा कि इस वर्ष देश में दक्षिण-पश्चिम मौनसून (जून से सितंबर) के दौरान होने वाली मौसमी बारिश सामान्य से कम रहने की संभावना है। भारत में इस दौरान 80 सेंटीमीटर बारिश होने की संभावना है। देश में



मौसमी बारिश का (1971 से 2020 तक) दीर्घकालिक औसत (एल.पी.ए.) 87 सेंटीमीटर रहा है। मौसम विभाग के महानिदेशक डॉ. एम. महापात्र ने संवाददाता सम्मेलन में कहा कि, मात्रात्मक रूप से, पूरे देश में मौसमी बारिश एल.पी.ए. के 92 प्रतिशत तक होने की संभावना है, जिसमें 5 प्रतिशत की कमी या बढ़ोत्तरी हो सकती है। सामान्य से कम वर्षा का एक कारण अलनीनो की स्थिति का उभरना हो सकता है, जिससे देश में कम बारिश होती है।

आई.एम.डी. के अनुसार, जलवायु मॉडल संकेत देते हैं कि जून के आसपास अलनीनो की स्थिति बनने की संभावना है। वर्तमान में भूमध्यरेखीय प्रशांत महासागर में कमजोर ला नीना की स्थिति धीरे-धीरे समाप्त होकर (तटस्थ) जलवायु स्थिति में बदल रही है। साथ ही, जलवायु मॉडल दर्शाते हैं कि मौनसून के दूसरे चरण में 'पॉजिटिव इंडियन ओशन डाइपोल' (पी.आई.ओ.डी.) की स्थिति विकसित हो सकती है।

'पॉजिटिव इंडियन ओशन डाइपोल' का अर्थ है हिंद महासागर के पश्चिमी भाग (अफ्रीकी तट) का सामान्य से अधिक गर्म होना और पूर्वी भाग (इंडोनेशिया) का ठंडा होना। इस स्थिति में हवाएं पूर्व से पश्चिम (बंगाल की खाड़ी से अरब सागर) की ओर चलती हैं। इससे हिंदू महासागर में समुद्र के तापमान में ऐसा बदलाव हो सकता है, जिससे मौसम पर असर पड़ेगा और बारिश के तरीके में परिवर्तन आ सकता है।

किसान भाईयो!

गेहूं के अवशेष (नाड़) को

न जलाएं

क्योंकि

- ➔ लगभग 5 करोड़ जीव प्राणी प्रभावित होते हैं।
- ➔ तापमान में औसतन 2-5 डिग्री की बढ़ोत्तरी हो जाती है, जिससे जीव-प्राणी प्रभावित होते हैं।
- ➔ पशुओं के लिए पराली/तूड़ी में कमी आ जाती है।
- ➔ मिट्टी में मौजूद खुराकी तत्त्व नष्ट हो जाते हैं।
- ➔ मिट्टी की उर्वरा-शक्ति खत्म हो जाती है।
- ➔ 18 लाख टन कार्बन डाइऑक्साइड गैसों हवा में बिखर जाती हैं, जो श्वास की बीमारियों को जन्म देती हैं।

यदि आप फिर भी गेहूं के अवशेष को जलाते हो तो आप सिर्फ मतलब-प्रस्त हैं !!

सीताफल/कस्टर्ड सेब, जिसे वैज्ञानिक रूप से एनोना स्क्वामोसा एल. के नाम से जाना जाता है, एक महत्वपूर्ण ऊष्णकटिबंधीय फल है, जो एनोनैसी (Annonaceae) कुल से संबंधित है। इसका मूल स्थान कैरिबियन क्षेत्र, मध्य अमेरिका तथा उत्तरी दक्षिण अमेरिका माना जाता है। वर्तमान समय में यह फल अपनी विशिष्ट मिठास, क्रीमी गूदे तथा उच्च पोषणीय गुणों के कारण वैश्विक स्तर पर लोकप्रिय हो चुका है। कस्टर्ड सेब न केवल स्वाद में उत्कृष्ट है, बल्कि इसमें पाए जाने वाले विटामिन, खनिज एवं जैव सक्रिय यौगिक इसे स्वास्थ्यवर्धक एवं औषधीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण बनाते हैं। भारत में सीताफल को विभिन्न नामों से जाना जाता है, जैसे शूगर एप्पल, स्वीटसोप तथा कस्टर्ड सेब। इसका अनूठा स्वाद, सुगंध एवं मुलायम बनावट इसे उपभोक्ताओं के बीच विशेष रूप से प्रिय बनाते हैं। साथ ही, इसका समृद्ध पोषक तत्व प्रोफाइल - विशेषकर विटामिन सी, आहार रेशा, पोटेशियम एवं एंटीऑक्सीडेंट - मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी है।

भारतीय संदर्भ में, सीताफल की खेती का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के अनुसार, यह फल देश के विभिन्न राज्यों जैसे महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, असम, उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, आंध्र प्रदेश एवं तमिलनाडू में व्यापक रूप से उगाया जाता है। वर्तमान में इसकी खेती लगभग 40,000 हेक्टेयर क्षेत्र में की जा रही है, जो इसकी आर्थिक



पोषण एवं स्वास्थ्य का खजाना

काजल एवं रजनी खन्ना, खाद्य एवं पोषण विभाग,
चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

मात्रा भी होती है। मुख्य रूप से यह फल थायमिन, रिबोफ्लेविन, लौह, नियासिन, फास्फोरस और कैल्शियम का प्रमुख स्रोत है। सीताफल कई आवश्यक खनिज भी प्रदान करता है, जिसमें मुख्य रूप से तांबा, पोटेशियम, मैग्नीज और मैग्नीशियम की उच्च मात्रा होती है।

सीताफल के फायदे

प्रतिरक्षक गुण : सीताफल एंटीऑक्सीकारक में समृद्ध है, जो शरीर को ऑक्सीकारक तनाव से बचाने में मदद करते हैं और कैंसर और हृदय रोग जैसी पुरानी बीमारियों के जोखिम को कम करते हैं।

संबंधी स्वास्थ्य बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पोटेशियम रक्तदाब को नियंत्रित करने में मदद करता है, जिससे सोडियम के प्रभावों का मुकाबला होता है, जबकि मैग्नीशियम दिल के कार्य को समर्थन देता है और दिल के दौरों तथा स्ट्रोक के खतरे को कम करता है। इसके अतिरिक्त, फल की फाइबर की मात्रा कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद करती है, जिससे हृदय स्वास्थ्य को और बढ़ावा मिलता है।

पाचन स्वास्थ्य : सीताफल आहार फाइबर का एक उत्कृष्ट स्रोत है, जो नियमित मल त्याग

रोग प्रतिरोधक क्षमता और त्वचा स्वास्थ्य : सीताफल त्वचा स्वास्थ्य और रोग प्रतिरोधक क्षमता दोनों के लिए अत्यंत लाभकारी फल है। यह विटामिन सी का एक समृद्ध स्रोत है, जो एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट के रूप में कार्य करता है और ऑक्सीडेटिव तनाव से लड़ने में मदद करता है। साथ ही, यह कोलेजन संश्लेषण को बढ़ावा देता है, जिससे त्वचा की लोच बनी रहती है और झुर्रियों की उपस्थिति कम होती है। इसमें उपस्थित विटामिन ए कोशिका मरम्मत और नवीकरण में सहायक होता है, जिससे त्वचा की रंगत में सुधार आता है। इसके अतिरिक्त, फ्लैवोनॉइड्स और पॉलीफेनॉल्स जैसे एंटीऑक्सीडेंट मुक्त कणों को निष्क्रिय करके समय से पहले त्वचा की उम्र बढ़ने और सूजन को कम करने में मदद करते हैं। इसके साथ ही, सीताफल में पाया जाने वाला विटामिन सी रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका नियमित सेवन शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ बनाता है, जिससे शरीर संक्रमण और विभिन्न बीमारियों के प्रति अधिक सक्षम और सहनशील हो जाता है।

कैंसर रोकथाम : सीताफल में विभिन्न जैविक सक्रिय यौगिक होते हैं जिनमें संभावित कैंसर-रोधी गुण होते हैं। अध्ययनों ने दिखाया है कि फल के एंटीऑक्सीकारक कैंसर कोशिकाओं की वृद्धि को रोक सकते हैं और कुछ प्रकार के कैंसर में एपोप्टोसिस (प्रोग्राम्ड सेल डेथ) को प्रेरित कर सकते हैं। यह फल एक प्राकृतिक कैंसर-निरोधक एजेंट के रूप में आशाजनक है।

बालों के स्वास्थ्य : सीताफल (कस्टर्ड एप्पल) बालों और त्वचा के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। इसमें मौजूद विटामिन सी कोलेजन उत्पादन बढ़ा कर बालों को मजबूत बनाता है और टूटने से बचाता है, जबकि विटामिन ए स्कैल्प को स्वस्थ रखकर नमी बनाए रखने में मदद करता है। इसके एंटीऑक्सीडेंट बालों को नुकसान से बचाते हैं और समय

से पहले सफेद होने व झड़ने को कम करते हैं। साथ ही, पोटेशियम और मैग्नीशियम जैसे खनिज बालों की वृद्धि में सहायक होते हैं। नियमित सेवन से त्वचा और बाल दोनों स्वस्थ व सशक्त बने रहते हैं।

औषधीय गुण

सूक्ष्मजीवरोधी गतिविधि : सीताफल में सूक्ष्मजीवरोधी गुण होते हैं, जिससे यह जीवाणु संबंधी और फंगल संक्रमणों की एक श्रृंखला के खिलाफ प्रभावी होता है। विशेष रूप से पत्तियों और बीजों में ऐसे यौगिक होते हैं, जो हानिकारक सूक्ष्मजीवों की वृद्धि को रोकते हैं, इस प्रकार शरीर को संक्रमणों से सुरक्षित रखते हैं।

नैदानिक और सूजन-रोधक गुण : सीताफल के पेड़ की पत्तियों का उपयोग पारंपरिक रूप से दर्द और सूजन के इलाज के लिए किया जाता रहा है। अनुसंधान के अनुसार ये गुण अल्कलॉइड्स और अन्य जैव सक्रिय यौगिकों की उपस्थिति के कारण हैं, जो दर्द के मार्गों को संचालित करते हैं और सूजन को कम करते हैं।

घाव भरना : सीताफल के पत्ते और छाल को अक्सर पट्टी और बाहरी उपचार में घाव भरने को बढ़ावा देने के लिए उपयोग किया जाता है। पौधे के सूक्ष्मजीवरोधी और सूजनरोधी गुण संक्रमण से रोकने और चिकित्सा प्रक्रिया को तेज करने में मदद करते हैं।

तंत्रिका सुरक्षा के प्रभाव : शोध के अनुसार सीताफल में तंत्रिका सुरक्षा गुण हो सकते हैं, जो अल्जाइमर और पार्किंसंस जैसे तंत्रिका संबंधी बीमारियों की रोकथाम और प्रबंधन में फायदेमंद हो सकते हैं। इस फल में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट और जैव सक्रिय यौगिक तंत्रिकाओं को ऑक्सीकारक तनाव और सूजन से बचाने में मदद करते हैं।

सीताफल का उपयोग

सीताफल का उपयोग सिर्फ फल के रूप में ही नहीं, बल्कि कई तरह से किया जाता है :

सीधा सेवन : जब फल पूरी तरह पक जाए, तो छिलका खोलकर अंदर की गूदा खाई जाती है। बीज निकालना अवश्य है क्योंकि बीज कठोर और कुछ मामलों में नुकसानदायक हो सकते हैं।

मिठाई : सीताफल की रबड़ी, बर्फी, स्मूदी, योगर्ट, आइसक्रीम आदि बनाने में इसकी गूदे का उपयोग होता है।

मिश्रित व्यंजन : ओटमील, पूडिंग, फल सलाद में शामिल करना, दूध या क्रीम के साथ मिलाना आदि।

पत्तियों और छिलकों का उपयोग : सीताफल की पत्तियों की चाय या अन्य पारंपरिक उपाय शामिल हैं, जैसा कि कुछ स्रोतों में पत्तों से ब्लड शुगर नियंत्रण या त्वचा के लिए उपयोग बताया गया है।

सुंदरता उत्पादों में : घर का बना फेस पैक या स्क्रब में गूदे या उसके छिलकों के पाउडर का उपयोग त्वचा निखारने के लिए किया जाता है।



एवं कृषि महत्ता को दर्शाता है। इस प्रकार, सीताफल एक ऐसा फल है जो स्वाद, पोषण एवं औषधीय गुणों का उत्कृष्ट समन्वय प्रस्तुत करता है, तथा भविष्य में पोषण सुरक्षा एवं कृषि विविधीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की क्षमता रखता है।

सीताफल का पोषण सम्बन्धी विवरण

सीताफल एक सामान्य मीठा फल है जिसमें उच्च मात्रा में कार्बोहाइड्रेट और कम मात्रा में अम्ल होते हैं, यह विभिन्न विटामिनों का समृद्ध स्रोत है। यह मुख्यतः विटामिन सी और अन्य महत्वपूर्ण मात्रा में विटामिन बी6, थायमिन, रिबोफ्लेविन और फोलेट प्रदान करता है। फल में विटामिन ए की सामान्य

विटामिन सी और पॉलीफेनॉल यौगिकों की मौजूदगी फल की मुक्त कणों को तटस्थ करने और कोशिकीय क्षति को रोकने की क्षमता को बढ़ाती है।

सूजनरोधी प्रभाव : पुरानी सूजन विभिन्न स्वास्थ्य स्थितियों, जैसे कि गठिया, हृदय संबंधी रोगों और मधुमेह में एक प्रमुख योगदानकर्ता है। सीताफल की सूजनरोधी गुण, जो इसके उच्च फ्लेवोनॉइड्स और अन्य जैव सक्रिय यौगिकों की सामग्री के कारण होती है, सूजन को कम करने और इन स्थितियों से जुड़ी लक्षणों को हल्का करने में मदद कर सकती है।

हृदय संबंधी स्वास्थ्य : सीताफल (कस्टर्ड एप्पल) में पोटेशियम और मैग्नीशियम हृदय

को बढ़ावा देकर पाचन में मदद करता है और कब्ज को रोकता है। फाइबर एक स्वस्थ आंत सूक्ष्मजीव समूह का भी समर्थन करता है, जो समग्र पाचन स्वास्थ्य और आंतों के विकारों की रोकथाम के लिए आवश्यक है।

मधुमेह का प्रबंधन : सीताफल का निम्न ग्लाइसेमिक सूचकांक इसे मधुमेह वाले व्यक्तियों के लिए एक उपयुक्त फल बनाता है। यह रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करता है क्योंकि यह रक्तधारा में शर्करा के अवशोषण को धीमा करता है। इसके अलावा, फल का उच्च फाइबर सामग्री बेहतर ग्लाइसेमिक सूचकांक में योगदान करती है और प्रकार 2 मधुमेह के विकसित होने के जोखिम को कम करती है।

अनाज के अच्छे उत्पादन के लिए किसानों को दिन-रात मेहनत करनी पड़ती है, क्योंकि यह कुछ विशेष तरह की निगरानी चाहता है तथा इसमें उर्वरक प्रबंधन एवं खरपतवार प्रबंधन बहुत ही मुश्किल होता है। किसान बहुत सारी मुश्किलें झेल कर अनाज का उत्पादन लेता है, जिसको बिन बुलाए मेहमान जैसे चूहे, कीड़े-मकौड़े आदि आकर खराब कर देते हैं। यदि इसका सुरक्षित रूप से भंडारण ना किया जाए, तो इसमें किसान का बहुत अधिक नुकसान होता है। यह नुकसान किसान का ना होकर सारे देश का हो जाता है और इसका मुख्य कारण है अनाज का सुरक्षित भंडारण ना होना एवं उसके रख-रखाव का सही प्रबंधन ना होना।

भारत में अनाज और तिलहन की फसलों में 10 से 20 प्रतिशत तक का नुकसान भंडारण के दौरान अनुमानित है। भंडारण के दौरान बीज व अनाज को क्षति पहुंचाने में कीट अपना अहम किरदार निभाते हैं। अनाज के अच्छे उत्पादन के लिए किसानों को दिन-रात मेहनत करनी पड़ती है, क्योंकि यह कुछ विशेष तरह की निगरानी चाहता है तथा इसमें उर्वरक प्रबंधन एवं खरपतवार प्रबंधन बहुत ही मुश्किल होता है। किसान बहुत सारी मुश्किलें

होती हैं एवं अनाज का पुआल भी अधिक मात्रा में मिलता है। पुआल का उपयोग पशु आहार, ईंधन एवं रसायन निर्माण में किया जाता है। कम्बाइनर से अनाज कटाई में पुआल की क्षति होती है एवं काफी अनाज के दाने टूट जाते हैं। टूटने से अनाज का बाजार मूल्य कम हो जाता है, परन्तु कम्बाइनर की कटाई क्षमता काफी अधिक होती है, जिससे समय की बचत होती है एवं कटाई लागत भी कम आती है। कटाई के समय क्षति को कम करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है :



झेल कर अनाज का उत्पादन लेता है, जिसको बिन बुलाए मेहमान जैसे चूहे, कीड़े-मकौड़े आदि आकर खराब कर देते हैं। यदि इसका सुरक्षित रूप से भंडारण ना किया जाए, तो इसमें किसान का बहुत अधिक नुकसान होता है। यह नुकसान किसान का ना होकर सारे देश का हो जाता है और इसका मुख्य कारण है अनाज का सुरक्षित भंडारण ना होना एवं उसके रख-रखाव का सही प्रबंधन ना होना। भंडार कीटों की लगभग 50 प्रजातियां हैं, जिनमें से करीब आधा दर्जन प्रजातियां ही आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। भंडार कीटों में कुछ कीट आंतरिक प्राथमिक तो कुछ बाह्य गौण भक्षी होते हैं। ऐसे कीट जो स्वयं बीज को सर्वप्रथम क्षति पहुंचाने में सक्षम होते हैं, वे प्राथमिक कीट कहे जाते हैं। इनमें सूंड वाली सुरसुरी, अनाज का छोटा छिद्रक प्रजातियां प्रमुख हैं। गौण कीट वे हैं, जो बाहर रह कर भूण या अन्य भाग को क्षति पहुंचाते हैं। अनाज की कटाई श्रमिकों या शक्ति चालित यंत्रों जैसे रीपर / कंबाइन हारवेस्टर आदि द्वारा की जाती है। श्रमिकों द्वारा कटाई करने में हस्तचालित उपकरणों जैसे कि हंसिया का उपयोग किया जाता है। हंसिया द्वारा कटाई में फसल की क्षति काफी कम

* अनाज की कटाई उचित नमी पर ही करनी चाहिए। अनाज की कटाई हेतु 20-22 प्रतिशत नमी उपयुक्त पाई गई है। अधिक नमी पर अपरिपक्व, टूटे एवं कम गुणवत्ता के दानों की संख्या अधिक हो जाती है।

* यह ध्यान रखें कि नम वातावरण में अनाज की कटाई नहीं की जाए।

* देरी से कटाई करने पर फसल भूमि पर गिर सकती है, जिन पर चूहों, चिड़ियों, कीटों का आक्रमण जल्दी होता है।

* अनाज की कटाई के बाद किस्मों के अनुसार अनाज को अलग-अलग रखना चाहिए, जिससे आपस में विभिन्न किस्मों के बीजों का मिश्रण ना हो।

* अनाज को कटाई के बाद अत्याधिक सुखाना नहीं चाहिए।

* अनाज को कटाई उपरांत वर्षा एवं ओस से बचाना चाहिए।

* अनाज को अत्याधिक शुष्क तेज सूर्य प्रकाश या तेज गति से नहीं सुखाना चाहिए, क्योंकि इससे गुणवत्ता में कमी आती है।

* अनाज को सुखाने के लिए पक्के सीमेंट फर्श एवं तिरपाल का उपयोग करना चाहिए।

* अनाज को सुखाने के समय चिड़ियों, चूहों तथा कीट-पतंगों से सुरक्षित रखना चाहिए।



अनाज का सुरक्षित भंडारण

डॉ. निरंजन कुमार बरोड़, डॉ. इंदू बाला सेठी, डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. लक्ष्मण प्रशाद एवं डॉ. लोकेश कुमार, कृषि अनुसंधान संस्थान, नोगांवा, अलवर (राजस्थान)

अनाज का भंडारण

ऐसा माना गया है कि देश का 10 से 20 प्रतिशत अनाज इसलिए खराब हो जाता है, क्योंकि वह सुरक्षित भंडारित नहीं किया गया। कीड़े-मकौड़ों एवं जीवाणुओं के द्वारा खराब किए गए अनाज का बाजार में तो भाव कम मिलता ही है। इसके साथ यह स्वास्थ्य के लिए भी ठीक नहीं रहता है

तथा इनसे अनाज के वजन में कमी आती है और खाद्य गुणों में भी कमी आती है। इसके लिए यह ज़रूरी हो जाता है कि अनाज का सुरक्षित भंडारण किया जाए। इसके लिए थोड़ा सा ध्यान देने की ज़रूरत है। वर्ष भर अनाज की उपलब्धता बनी रहे, इसके लिए इसका उचित भंडारण ज़रूरी है। लम्बी अवधि के भंडारण हेतु

नमी की मात्रा 12 प्रतिशत एवं अत्यावधि भंडारण हेतु 14 प्रतिशत होनी चाहिए। भंडारण से पहले या बाद में भंडारित कीटों से बचाव का भी प्रबंध करना आवश्यक है। भंडारण हेतु विभिन्न आकारों, किस्मों एवं सामग्रियों के बने पात्र प्रयोग किए जाते हैं। यह ध्यान रखना चाहिए कि भंडार गृह का

शेष पृष्ठ 8 पर



No. 1
RURAL WEEKLY

Now Think Before Advertising
KHETI DUNIYAN RETAINS LEADERSHIP IN READERSHIP



KHETI DUNIYAN
VOICE OF THE FARMERS

KD COMPLEX, GAUSHALA ROAD, NEAR SHER-E-PUNJAB MARKET, PATIALA-147001 (PB.) INDIA

Mob. 90410-14575

khetiduniyan1983@gmail.com

खेती संदेश

KHETI SANDESH

मुख्य कार्यालय :
9-ए, अजीत नगर,
पटियाला-147001
(पंजाब)
मो. 98151-04575

कार्पोरेट कार्यालय :
के.डी. कॉम्प्लेक्स, गरुशाला रोड,
नजदीक शोरे पंजाब मार्केट,
पटियाला-147001
(पंजाब)
मो. 90410-14575

वर्ष : 02 अंक : 17
तिथि : 27-04-2026

सम्पादक

परमिंदर कौर

सम्पादकीय बोर्ड

डॉ. डी.डी. नारंग
डॉ. जे.एस. डाल
डॉ. आर.एम. फुलझेले

Editor : PARMINDER KAUR
Printer, Publisher and Owner of Weekly
'KHETI SANDESH' Printed at Drishti Printers,
Dasmesh Market, Near Sher-e-Punjab Market,
Gaushala Road, Patiala-147001 (Pb.) and
published from Kheti Sandesh, House No. 9-A, Ajit Nagar,
Patiala-147001 (Pb.). E-mail : khetisandesh2025@gmail.com
Mob. 90410-14575, RNI No. PBBIL/25/A0210

वर्किंग टेबल पर फर्बोंगे ये पौधे

घर हो या ऑफिस। अगर आप वर्किंग टेबल को हरा-भरा बना दें, तो क्या कहने। हरियाली भी, ऑक्सीजन भी और सुंदर नजारा अलग से। आमतौर पर वर्किंग टेबल पर इतनी जगह नहीं होती कि उस पर बड़े गमले या बड़े पौधे रख सकें। इसलिए छोटे-छोटे ऐसे कई पौधे रख सकते हैं, जिन्हें धूप की ज्यादा जरूरत नहीं होती। ये इंडोर प्लांट खुली हवा और ब्राइट लाइट से लम्बे समय तक अच्छी तरह चलते हैं। ये पौधे देखने में तो आकर्षक होते ही हैं, सेहत के लिए भी फायदेमंद होते हैं। ये पौधे दिमाग को फ्रेश रखते हैं, एयर को प्यूरीफाई करते हैं, कंसनट्रेशन पावर बढ़ाते हैं और पॉजिटिव एनर्जी का संचार करते हैं। आइये जानते हैं ऐसे ही कुछ पौधों के बारे में :-



जीजी प्लांट : टेबल पर रखने के लिए बहुत अच्छा पौधा है। इसे देख-रेख की ज्यादा जरूरत नहीं होती। धीरे-धीरे ग्रो करता है। इसलिए छोटे-छोटे गमलों में



काफी समय तक रह सकता है। महीने में 2-3 बार ही पानी देना चाहिए।

एंथुरियम प्लांट : छोटे से गमले में लगने वाले इस पौधे को भी ज्यादा धूप, पानी और फर्टिलाइजर की जरूरत नहीं होती है। इसमें फूल भी आते हैं, जो काफी दिन तक खिले रहते हैं और सबका ध्यान अपनी ओर खींचते हैं। इसकी ज्यादा देखभाल की जरूरत नहीं पड़ती है।

पीस लिली : टेबल पर रखने वाला बेहतरीन पौधा है। पीस लिली का पौधा पूरे साल हरा-भरा रहता है। इसमें मार्च से सितंबर तक सफेद रंग के फूल आते हैं। इसकी चमकदार पत्तियों के कारण यह आकर्षक लगता है। पानी की ज्यादा जरूरत नहीं होती, केवल मिट्टी में नमी बनाए रखना जरूरी है। इस पौधे की खासियत है कि जब इसे पानी की जरूरत होती है, तो इसके पत्ते नीचे की ओर झुक जाते हैं। ऐसे में पानी स्प्रे से देना बेहतर है। अगर पौधे को हल्की धूप मिलती है, तो यह बहुत जल्दी ग्रो करता है और फूल जल्दी आते हैं।

ड्रेसीना : कलरफुल आकर्षक पत्तियों वाला यह पौधा भी धीरे-धीरे बढ़ता है। जब यह पौधा छोटा होता है, आप घर के अंदर किसी भी टेबल पर रख सकते हैं। इसे कटिंग से भी लगाया जा सकता है। ब्राइट लाइट में अच्छी तरह विकसित होता है।

एलोकेशिया : इसकी पत्तियां काफी चमकदार और आकर्षक होती हैं। जैसे-जैसे पौधा बड़ा होता है, इसकी पत्तियों का रंग और आकार बदलता रहता है। यह पौधा कटिंग से भी लगाया जा सकता है। गर्मी के मौसम में इसकी ग्रोथ ज्यादा होती है।

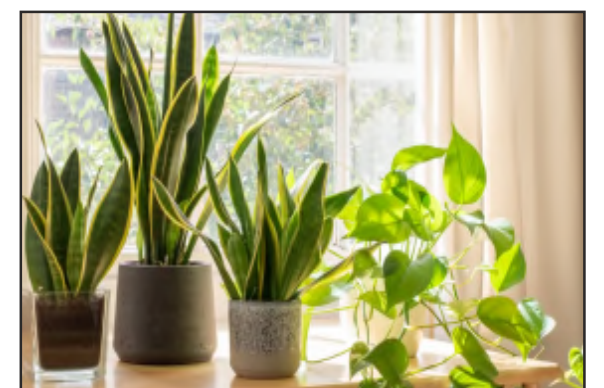
जेबरा हवर्थिया : इसकी पत्तियों पर जेबरा की लाइन का पैटर्न होता है। जो देखने में बहुत आकर्षक लगता है। इसकी जड़ों से छोटे-छोटे बेबी प्लांट निकलते हैं, जिससे यह पौधा अपने आप मल्टीप्लाई होता रहता है। गर्मी के मौसम में इस पर खूबसूरत फूल भी आते हैं। इसके पौधे को छोटे से गमले में

लगा कर अपनी टेबल को सजाया जा सकता है।
लकी बैम्बू प्लांट : मिट्टी के अलावा छोटे-से कांच के वाटर बाउल में भी आसानी से ग्रो हो जाता है। इसका पानी बार-बार बदलने की भी जरूरत नहीं होती, 4-5 दिन में बदल सकते हैं। आप बाउल में जैल वाली बॉल भी डाल सकते हैं। इसे शुभ भी माना जाता है।

सिंघोनियम प्लांट : देखने में सुंदर लगता है। इसे देख-रेख की ज्यादा जरूरत नहीं होती। इसमें कम ऊंचाई के और कलरफुल पत्तियों वाले पौधे भी होते हैं। छोटे-छोटे गमले में भी यह कई महीने तक चल जाते हैं। खिड़की के पास रखी टेबल पर यह अच्छी तरह बढ़ते हैं।

स्नैक प्लांट : कई वैरायटियों में मिलने वाला स्नैक प्लांट घर के अंदर रखा जाने वाला बेहतरीन पौधा है। सप्ताह में एक या दो बार पानी देने की जरूरत होती है। ज्यादा देखभाल की जरूरत नहीं होती धीरे-धीरे मल्टीप्लाई होते रहते हैं।

मनीप्लांट : इसे छोटे-से गमले या वाटर पॉट में लगा कर अपनी टेबल पर रख सकते हैं। ये कई वैरायटि



में आते हैं। छोटे गमले में लगे होने के कारण इनके पत्ते छोटे रहते हैं। एयर प्यूरीफाई करने में मदद करते हैं।

जैड प्लांट : ज्यादा देख-रेख और पानी के बिना, लम्बे समय तक चलने वाला सैकुलेंट पौधा है। घर के लिए यह प्लांट लकी माना जाता है। छोटी-मोटी और गोल पत्तियों से यह पौधा बहुत आसानी से ग्रो हो जाता है।

वंडरिंग ज्यू प्लांट : इसे भी छोटे-से गमले या वाटर पॉट में लगाया जा सकता है। कलरफुल पत्तियों वाला यह पौधा आसानी से कटिंग से लग जाता है। टेबल को कलरफुल लुक देता है।

पोलका डॉट : इसकी हरी पत्तियों पर छोटे-छोटे कलरफुल स्पॉट्स होते हैं। इनकी पत्तियां और जड़ें छोटी होती हैं। ज्यादा ऊंचाई में नहीं बढ़ता। इसलिए इनके एक या दो वैरायटि के पौधे छोटे से गमले में लगा कर अपनी टेबल को आकर्षक बना सकते हैं।

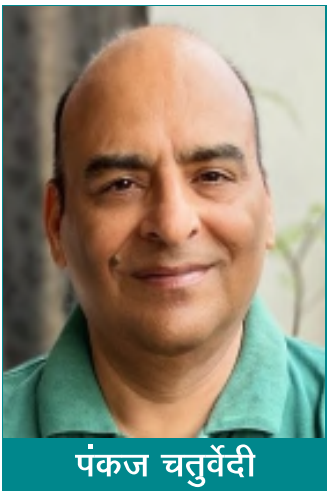
भारत दुनिया की लगभग 18 प्रतिशत आबादी का घर है, लेकिन हमारे पास वैश्विक मीठे पानी के संसाधनों का केवल 4 प्रतिशत हिस्सा उपलब्ध है। यह असंतुलन ही देश में जल संकट की बुनियादी जड़ है। नीति आयोग की हालिया रिपोर्टों के अनुसार, लगभग 60 करोड़ भारतीय उच्च से अत्यधिक जल तनाव का सामना कर रहे हैं। सवाल यह है कि क्या हम अपने नागरिकों को एक गिलास शुद्ध पानी देने में सक्षम हैं?

इस साल के फरवरी 2026 में पेश किए गए केंद्रीय बजट में जल शक्ति मंत्रालय के लिए 67,600 करोड़ रुपये का आवंटन कर सरकार ने अपनी मंशा तो साफ कर दी



पेयजल संकट

पानी आपूर्ति की निरंतरता व शुद्धता जरूरी



पंकज चतुर्वेदी

है। लेकिन जल जीवन मिशन और 'अमृत' जैसे प्रोजेक्ट्स के पिछले सात वर्षों के सफर को देखें, तो यह स्पष्ट होता है कि व्यवस्था ने केवल पाइप बिछाने की गति को ही सफलता मान लिया, जबकि पानी की शुद्धता और उसकी निरंतरता को हाशिए पर धकेल दिया गया।

भारत के शहरी-ग्रामीण इलाकों में दूषित पानी को लेकर बात करें तो दिसंबर, 2025 से जनवरी 2026 के पहले सप्ताह के बीच ही देश के 26 प्रमुख शहरों में सीवेज मिश्रित पानी पीने से 5,500 से अधिक लोग बीमार हुए और कम से कम 34 लोगों

की मौत दर्ज की गई। भारत का सबसे स्वच्छ शहर इंदौर के भागीरथपुरा क्षेत्र में दिसंबर, 2025 के अंतिम सप्ताह में पाइपलाइन में सीवेज का पानी मिलने से 37 लोगों की मौत हो गई और 1,400 से अधिक लोग अस्पताल पहुंच गए। इसी तरह, जनवरी, 2026 की शुरुआत में बेंगलुरु के पांश इलाकों और गांधीनगर (गुजरात) में सैकड़ों बच्चे दूषित पानी के कारण टाइफाइड और डायरिया का शिकार हुए।

अगस्त, 2019 में जब 'जल जीवन मिशन' शुरू हुआ, तब लक्ष्य था 2024 तक हर घर को नल से जोड़ना। सरकारी पोर्टल के अनुसार, जनवरी 2026 तक देश के लगभग 15.8 करोड़ घरों में नल लग चुके हैं। लेकिन इस 'संख्यात्मक सफलता' के पीछे एक बड़ा ढांचागत दोष है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण के 79वें दौर के आंकड़ों के अनुसार, पाइपलाइन कवरेज के बावजूद केवल 39

प्रतिशत ग्रामीण घर ही नल के पानी को अपने प्राथमिक स्रोत के रूप में उपयोग कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड जैसे राज्यों में यह उपयोग दर 10 प्रतिशत से 30 प्रतिशत के बीच है।

देखा गया कि हजारों गांवों में पाइप और नल तो लगे हैं, लेकिन पानी का दबाव इतना कम है कि वह अंतिम घर तक नहीं पहुंचता। कई स्थानों पर तो नल केवल 'शोपीस' बनकर रह गए हैं। फिर नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, भारत के पहाड़ी क्षेत्रों के 60 प्रतिशत जल स्रोत सूख चुके हैं। मैदानी इलाकों में भूजल का स्तर इतनी तेजी से गिर रहा है कि नलों के लिए पानी का कोई स्थायी स्रोत ही नहीं बचा है। जवाबदेही की कमी के कारण पाइपलाइनें बिछाने के कुछ महीनों बाद ही फटने लगी हैं।

पंजाब, हरियाणा और राजस्थान जैसे राज्यों में भूजल का स्तर काफी नीचे गिर गया है।

कृषि में 'वाटर गजलर' फसलों (जैसे धान और गन्ना) के लिए अंधाधुंध पंपिंग ने जलभृतों (एक्वाफर्स) को सुखा दिया है। इन सभी कारणों से पानी की गुणवत्ता में भी गिरावट आ रही है। बड़ी मात्रा में सतही जल प्रदूषित है। भूजल में आर्सेनिक, फ्लोराइड और यूरेनियम की बढ़ती मात्रा 'कैंसर बेल्ट' जैसी गंभीर स्वास्थ्य समस्याओं को जन्म दे रही है।

गांवों से पलायन और शहरों का अनियोजित विकास, सरकार द्वारा तैयार मूलभूत संरचना पर आवश्यकता से अधिक बोझ ने महानगरों को पानी के लिए कंगाल बना दिया है। दिल्ली, बेंगलुरु और चेन्नई जैसे महानगरों में पाइपलाइन लीकेज और सीवेज मिक्सिंग एक आम समस्या बन गई है।

सरकार द्वारा शहरी क्षेत्रों के लिए शुरू की गई महत्वाकांक्षी योजना 'अमृत 2.0' का लक्ष्य शहरों को 'वाटर सिक्योर' बनाना था। लेकिन संसदीय स्थायी समिति

की दिसंबर 2025 की रिपोर्ट के अनुसार, शहरी भारत में अभी भी बड़ी मात्रा में पानी 'नॉन-रेवेन्यू वॉटर' के रूप में बर्बाद हो जाता है, जो मुख्य रूप से पाइपलाइनों के रिसाव के कारण होता है। सबसे बड़ी विफलता जल वितरण और सीवेज प्रबंधन के बीच समन्वय का अभाव है।

बजट 2026 में सरकार ने जल जीवन मिशन की समय सीमा को बढ़ाकर दिसंबर 2028 कर दिया है। यह एक मूक स्वीकारोक्ति है कि 2024 और 2025 के लक्ष्य पूरे नहीं हो सके। बजट में इस बार 'वेस्ट वॉटर रिसाइकलिंग' और 'यूज्ड वॉटर ट्रीटमेंट' पर जोर दिया गया है, लेकिन इसके कार्यान्वयन के लिए आवश्यक तकनीकी कौशल शहरी निकायों के पास नहीं है। पिछले वित्त वर्ष में जल शक्ति मंत्रालय ने आवंटित बजट का एक बड़ा हिस्सा खर्च ही नहीं किया, जो प्रशासनिक कमजोरी को दर्शाता है।

बजट 2026 में राज्यों के लिए 67,600 करोड़ रुपये की राशि का उपयोग तभी सार्थक होगा जब उसे 'क्वालिटी ऑडिट' से जोड़ा जाए। आज भी देश के 230 जिलों में आर्सेनिक और 469 जिलों में फ्लोराइड पानी में घुला हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़े चेतावनी देते हैं कि असुरक्षित पानी से भारत में होने वाली मौतें तेजी से बढ़ सकती हैं। बजट के आंकड़ों और धरातल की हकीकत के बीच जो गहरी खाई बन गई है, उसे भरने के लिए केवल धन की नहीं बल्कि एक ईमानदार और दीर्घकालिक विजन की आवश्यकता है।

बजट में जल सुविधा के लिए सरकार ने बड़ी राशि का प्रावधान किया है लेकिन जब तक सरकार 'नल' लगाने की संख्या की होड़ छोड़कर 'जल' की गुणवत्ता, वर्षा जल संचयन और जवाबदेह प्रबंधन पर ध्यान नहीं देगी, तब तक बजट की घोषणाएं सार्थक न होंगी।

माईट समस्या तथा रोकथाम

कृषि में आर्थिक दृष्टि से माईट (वरुथी) का अति विशेष महत्व है। माईट, कीटों के समान ही एक आर्थोपोड जन्तु है। इनमें प्रायः आठ टांगें होती हैं तथा इसका शरीर दो भागों में विभक्त होता है, जिसे सिरोकक्ष तथा उदर के नाम से जाना जाता है। माईट का जीवन-चक्र तीन भागों में बंटा हुआ होता है, जोकि अंडा, शिशु तथा प्रौढ़ होती है। अधिकतर पादप भक्षी माईट का रंग लाल, भूरा, पीला, गुलाबी अथवा हल्का हरा होता है। माईट के शिशु तथा प्रौढ़ दोनों ही फसलों का अपने मुखांगों से लगातार रस चूसते रहते हैं, जिसके कारण पौधों की बढ़वार रुक जाती है तथा पैदावार में भारी कमी आ जाती है। माईट ग्रस्त पत्तियों पर सफेद या पीले रंग के धब्बे बन जाते हैं। पौधों पर बने जाले माईट की उपस्थिति को दर्शाते हैं। इन जालों में मिट्टी के छोटे-छोटे टुकड़े जमा हो जाते हैं, ये सभी पौधों पर

माईट की उपस्थिति को दर्शाने के लिए अति महत्वपूर्ण सूचक है। पत्तियों के अलावा, माईट कोमल तनों, फूलों आदि को भी रस चूस कर कमजोर बनाते हैं। साथ ही साथ ये फसलों में विषाणु, कवक आदि रोगों को फैलाने में सहायता करती है। कुछ ईरियोफ्रीड कुल की माईट तो पत्तियों पर गांठें बना कर उनके अंदर रहती है। यहां पर ये बात स्पष्ट करना जरूरी है, कि सभी माईट हानिकारक नहीं होती हैं, कुदरत में कुछ परभक्षी माईट भी पाई जाती हैं, जोकि पादपभक्षी माईट का शिकार करके उनकी संख्या को कम करती हैं। आज कृषि में माईट की समस्या बहुत तेजी से बढ़ रही है, जिसका प्रमुख कारण अधिक कीटनाशी दवाओं का प्रयोग, अधिक उपज देने वाली किस्मों का प्रयोग, नाइट्रोजन उर्वरकों का ज़रूरत से अधिक उपयोग करना आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त ग्रीन हाऊस में तो माईट की समस्या बड़ी



तेजी से बढ़ती जा रही है, क्योंकि वहां का आंतरिक तापमान तथा नमी इनकी बढ़वार के लिए उपयुक्त होती है। आज माईट का उपद्रव सब्जियों (भिंडी, बैंगन, खीरा वर्गीय आदि), फलों (आम, चीकू, केला आदि) तथा धान्य (गेहूं, चावल, ज्वार आदि) फसलों में तेजी से बढ़ रहा है।

समन्वित प्रबंधन के कुछ उपाय :

1. फसलों की सही समय पर बुवाई करनी चाहिए।
2. सदैव उचित फसल-चक्र अपनाया जाए।
3. माईट प्रतिरोधक किस्मों की बुवाई करनी चाहिए।
4. फसल कटाई के उपरांत खेत की

साफ-सफाई करके फसलों के अवशेषों को नष्ट कर देना चाहिए।

5. माईट से ग्रस्त फलियां, टहनियां, फलों आदि को भी समय-समय पर नष्ट करना चाहिए।

6. कभी-कभी छोटे बागों में पौधों को पानी की तेज फुहारों से धोना लाभकारी रहता है, क्योंकि इससे माईट तेज़ धार के साथ बह जाती है।

7. किसान भाई, मित्र माईट (परभक्षी माईट) की सही-सही पहचान करके उनका संरक्षण तथा संवर्धन करें।

8. अधिक प्रकोप की स्थिति में माईटनाशक दवाओं का छिड़काव करना चाहिए।

मूलवृत्त :- नीबूवर्गीय फलों का प्रवर्धन मुख्यतया कलिकायन द्वारा होता है। इसके लिए पहले मूलवृत्त के पौधो नर्सरी में बीज द्वारा तैयार करते हैं तथा बाद में उस पर बडिंग करते हैं। व्यावयिक स्तर पर हमारे देश में मुख्यतः दो मूलवृत्त प्रयोग किये जाते हैं। रफ लेमन तथा रंगपुर लाईम ये दोनों मूलवृत्त संतरे के लिए अच्छे पाये गये हैं। मौसंबी के लिए रंगपुर लाईम सर्वोत्तम है। हाल ही में केंद्रीय नीबूवर्गीय फल अनुसंधान संस्थान नागपुर द्वारा एक नये मूलवृत्त को नागपुर संतरा व नीबू के लिए सिफारिश किया है जिसका नाम एलिमों है। यह मूलवृत्त अमेरिका से मंगाया गया है तथा करीब 15 साल के अनुसंधान के बाद इसे संतरे के लिए अच्छा पाया गया है।

नीबू के लिए बीज द्वारा प्रवर्धन सबसे अच्छा होता है, क्योंकि न्यूकिसलर पौधा अच्छा होता है। सबसे खास बात यह है कि बीज तथा कलिकायन द्वारा तैयार पौधों में चौथे साल फल लगते हैं। जबकि संतरा मौसंबी में बीज द्वारा तैयार पौधों में सातवें व आठवें साल फल आता है। इसलिए इनके कलिकायन द्वारा तैयार पौधे ही लगाने चाहिए।

मूलवृत्त का मुख्य फायदा इस प्रकार है :- * पेड़ जल्दी फसल में आ जाते हैं।

* पेड़ों का आकार एक जैसा होता है।

* फसल: तथा फलों के गुण पर अंकुश होता है।

* प्रतिकूल परिस्थितियों के प्रति सहनशीलता बढ़ती है।

* रोगों तथा बीमारियों के प्रति सहिष्णुता बढ़ती है।

इस प्रकार मूलवृत्त कई उद्यानिकीय गुणों को प्रभावित करता है, जैसे-फूल लगने का समय, फल का आकार, उपज, फल के गुण, टंड तथा सूखे के प्रति सहनशीलता, बीमारियों के प्रति सहनशीलता व फलों के पकने का समय आदि।

भूमि व जलवायु :- नीबूवर्गीय फलों की बागवानी की सफलता या असफलता, सही मृदा के चुनाव पर भी निर्भर करता है। सही भूमि का चुनाव न होने से उद्योगों की उत्पादकता में अंतर उद्यानों की केवल विकास क्षमता पर ही नहीं अपितु उद्यानों की पैदावार की उम्र पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है। अच्छी भूमि के गुण जैसे पी.एच.मान, भूमि की उर्वरता, जल निकासी, मुक्त चूने की मात्रा आदि है। नागपुरी संतरा मध्य भारत में काली तथा क्षारीय भूमि में होती है। दोमट भूमि, बहुत भारी भूमि की अपेक्षा अच्छे जल विकास होने की वजह से नीबूवर्गीय फलों के लिए अच्छी मानी जाती है। नीबूवर्गीय फल सदाबहार हरे होते हैं और इनकी वृद्धि कोहरे-रहित उपोष्णिय से कम उपोष्णिय क्षेत्रों में होती है। वातावरण के विभिन्न अवयवों जैसे तापमान नमी, हवा और प्रकाश की तीव्रता नीबूवर्गीय फलों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मध्य भारत की जलवायु मूलतः मध्यम



नीबूवर्गीय फलों की बागवानी

आर्द्र उष्ण है, जो संतरे, मौसंबी व नीबू की बागवानी के लिए उपयुक्त है।

उद्यान संस्थापन (बाग लगाना) :- नीबूवर्गीय फलों के बगीचे अन्य की अपेक्षा दीर्घकालीन होते हैं। अतः इसकी बाग लगाने से पहले लंबी योजना कई बातों को ध्यान में रखकर बनाया जाती है। यदि संभव हो तो उद्यान विशेषज्ञ से सलाह करने के बाद ही फलों बाग लगाने चाहिए, क्योंकि बाग से आमदनी पांच साल बाद में मिलेगी। थोड़ी सी गलती के कारण आप को पछताना पड़ सकता है। अतः व्यावसायिक बाग के ऐसे स्थान का चुनाव करना चाहिए जहां से फल को बाजार तक सुविधापूर्वक पहुंचाया जा सकें। सिंचाई की उचित सुविधा हो। स्थान का चुनाव करने के बाद उसे अच्छी तरह समतल कर लेना चाहिए तथा जल निकास का उचित प्रबंधन कर लेना चाहिए। हमारे देश में बाग लगाने के लिए रेखांकन की विभिन्न विधि अपनाई जाती है। अच्छे रेखांकन उसे कहते हैं, जिससे प्रत्येक पौधे को पूर्ण विकसित होने तक जगह मिल जाय तथा बाग की निराई-गुड़ाई तथा अन्य क्रियायें करने में कोई असुविधा न हो। देश के अधिकांश भागों में वर्गाकार विधि अपनाई जाती है, क्योंकि यह एक आसान विधि है।

गड्डे खोदना :- इसके लिए चिह्नित स्थान पर गर्मी के दिनों में 2.5x2.5x2.5 आकार के गड्डे खोद लेना चाहिए तथा इसे अच्छी तरह धूप लग जाने के बाद जून के पहले हफ्ते में गड्डे में सड़ी गोबर की खाद और मिट्टी उचित मात्रा में मिलाकर गड्डे भर देना

चाहिए। जहां पर दीमक की समस्या हो उस स्थान पर गड्डे भरते समय लीडेन नामक दवा 50 ग्राम प्रति गड्डे में मिट्टी भरते समय मिलाकर भरना चाहिए।

पौधे लगाना :- नीबूवर्गीय फलों के पौधे किस्म व जलवायु के अनुसार विभिन्न दूरी पर लगाये जाते हैं।

नागपुरी संतरा = 6x6 मीटर
मौसंबी = 6x6 मीटर
नीबू = 5x5 मीटर

पौधे लगाने समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बडिंग का जुड़ाव हमेशा जमीन के उपर रहे। वर्षा के समय पौधे लगाते समय इस बात का भी ध्यान देना चाहिए कि जमीन में नमी बनी रहे। आरंभ में पौधों को किसी लकड़ी का सहारा देना ठीक रहता है, जिससे पौधे सीधे रहे गिरे नहीं।

सिंचाई :- नीबूवर्गीय फलों में सिंचाई के लिए पानी की मात्रा वातावरण मृदा और पौधों की उम्र पर निर्भर करता है। सिंचाई की कई विधियां हैं, लेकिन टपक सिंचाई सबसे अच्छी मानी गई है। जैसे देश में मुख्य रूप से नीबूवर्गीय पौधों में सिंचाई बेसीन पद्धति (थाला बनाकर) से दो पौधों के बीज नाली बनाकर करते हैं। इसमें सावधानी बरतनी चाहिए कि पौधे तने के सीधे संपर्क में न आये। टपक सिंचाई शुरू में थोड़ी खर्चीली होती है, लेकिन इसके कई फायदे हैं। इस विधि में ड्रिपर्स द्वारा पानी बूंद-बूंद करके जमीन में पौधों के चारों ओर जाता है, जिससे एक सामान्य नमी बनी रहती है। इस विधि से फल की उपज व गुणवत्ता में सुधार के साथ पानी की 40 प्रतिशत मात्रा की बचत होती है।

नागपुरी संतरा व नीबू में

उर्वरक की मात्रा :- नीबूवर्गीय फलों में खाद व उर्वरक एक साथ न देकर 2-3 बार में देना चाहिए। नागपुरी संतरा के लिए फलन प्रारंभ होने के बाद 600 ग्राम नाईट्रोजन, 200 ग्राम फास्फोरस तथा 100 ग्राम पोटेशियम का मिश्रण प्रतिवर्ष प्रति पौधा दो या तीन भाग में बांटकर 2-3 बार में देना चाहिए। नीबू के लिए 800 ग्राम नाईट्रोजन, 200 ग्राम फास्फोरस तथा 100



ग्राम पोटेशियम प्रति वर्ष प्रति पेड़ दो-तीन बार में देना चाहिए। यह ध्यान रहे कि उर्वरक देते समय जमीन में उपयुक्त नमी रहे। उर्वरक के साथ गोबर की खाद काफी फायदेमंद होती है।

बीच की फसल :- सामान्यता नीबूवर्गीय फलों में पेड़ लगाने के करीब 4-5 साल बाद फल आते हैं। इस अवधि में किसानों को कोई फायदा नहीं होता है। इस कमी को पूरा करने के लिए बीच की फसल यानि दो पौधों के बीच की जगह में मुख्य फसल को नुकसान पहुंचाते हैं। सही अंतर पर फसल को लगाकर अतिरिक्त आमदनी प्राप्त की जा सकती है। मिट्टी से अधिक पोषक तत्व लेने वाली फसलें जैसे अदरक, हल्दी आदि नहीं लगाना चाहिए। अनुसंधान द्वारा सिद्ध हो गया है कि नीबूवर्गीय

फलों के बीच में चना मटर, सोयाबीन, गवार, लागना सबसे लाभदायक है। क्योंकि इन फसलों को नीबूवर्गीय फलों पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता है।

मुख्य कीड़े व बीमारियां :- जैसे तो नीबूवर्गीय फलों पर कई तरह के कीड़े व बीमारियों लगती हैं, लेकिन मुख्य कीड़े व बीमारियों की रोकथाम इस प्रकार है।

छाल खाने वाले केटर पीलर :- यह पेड़ों की मुख्य शाखाओं पर इनकी छाल को खाते हैं जिससे पेड़ सूखना शुरू कर देता है। इसके नियंत्रण के लिए प्रभावित भाग पर से झिल्ली हटाकर कीड़े द्वारा बनाये छिद्र में डाईक्लोरोवास (5 मिली प्रति लीटर पानी) का इंजेक्शन लार्वा की स्थिति में दिया जाता है। साथ ही कपास को इस पानी घोल में डुबाकर छिद्र को बंद कर देना चाहिए। पुराने बगीचे में इसका प्रकोप अधिक होता है।

फाईटोथोरा :- यह बीमारी बाग को सबसे अधिक नुकसान पहुंचाती है। इसके नियंत्रण के लिए फोसेटील ए.एल. या मेफेनोक्झम (2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी) का प्रभावित पड़े भाग पर छिड़काव और थाले (बेसीन) में 35-40 दिनों के अंतराल पर मौनसून के शुरू होते ही देना चाहिए। ट्रापकोडर्मा का उपयोग प्रभावी होता है। इसके अलावा प्रभावित भाग को खुरचकर दवा का पेस्ट लगाते हैं।

सिट्स कैंकर :- यह बीमारी नीबू के पेड़ों पर अधिक लगती है। प्रभावित बगीचों को बरसात शुरू होने से पहले अच्छी तरह सभी सूखी तथा बीमारी वाली टहनियों को काटकर जला देना चाहिए तथा पेड़ों पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (सी.ओ.सी) 3

ग्राम प्रति लीटर पानी का छिड़काव 30 दिन के अंतराल पर 3 से 4 बार करने से इस रोग पर नियंत्रण पाया जा सकता है।

फल मक्खी :- इसका प्रकोप फल पकते समय होता है। इससे प्रभावित फल बगीचे में ही गिर जाते हैं जिससे किसानों का अधिक नुकसान होता है। वयस्क मक्खी फल के ऊपरी परत को छिद्र कर अंडे देती है। इल्लियां अंडे से निकलकर फल के अंदर ही गूदे को खाती है जिससे फल सड़कर गिरने लगता है। रंग परिवर्तन के समय नीम का तेल (1 प्रतिशत) का छिड़काव प्रभावी होता है। इसके अलावा मिथाईल युजिनाल का उपयोग भी प्रभावी होता है। इसके अलावा फल मक्खी को पकड़कर मारना एक आसान तरीका है।



मिट्टी विभिन्न प्रकार के खनिज लवणों का एक मिश्रण है। ये खनिज लवण घुलनशील अवस्था में पौधों को आवश्यक पोषक तत्व प्रदान करते हैं। परन्तु कुछ खास परिस्थितियों में ये लवण अत्याधिक मात्रा में मिट्टी की ऊपरी उपजाऊ सतह में जमा हो जाते हैं। इस तरह लवणों का जमा होना लवण ग्रसित भूमि को जन्म देता है। लवण ग्रसित भूमि का पौधों की वृद्धि एवं विकास व फसलों की पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान पौधों की वृद्धि एवं विकास व फसलों की पैदावार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के अनुसार भारत में लगभग 75 लाख हैक्टेयर भूमि लवण ग्रसित है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अम्लीय, लवणीय व क्षारीय भूमि लवण ग्रसित भूमि के अन्तर्गत आती है। भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों में लवणीय व क्षारीय भूमि की अधिकता है। अतः इस लेख में हम लवणीय व क्षारीय भूमि के सुधार पर चर्चा करेंगे।

लवणीय भूमि : यह भूमि मूलतः उन जगहों पर पाई जाती है, जहां जल का वाष्पन-उत्सर्जन के कारण वर्षण की तुलना में भूमि से वायुमंडल में स्थानांतरण अधिक होता है। आमतौर पर उत्तर-पश्चिमी राज्यों के सूखा ग्रसित क्षेत्रों में यह स्थिति पाई जाती है। अधिक लवणता वाले खारे पानी से अधिक सिंचाई करने से भी इस प्रकार की समस्या पैदा हो सकती है। लवणीय भूमि में कैल्शियम, मैग्नीशियम एवं सोडियम के क्लोराइड व सल्फेट के लवणों की अधिकता होती है। इस प्रकार की मिट्टी का सामान्यतः पी.एच. मान 8.5 से कम होता है। विद्युत चालकता 4 डे.सी./मीटर से अधिक होती है तथा विनिमयशील सोडियम की मात्रा भी 15 प्रतिशत से कम होती है। चूंकि ये लवण घुलनशील प्रवृत्ति के होते हैं। अतः लवणीय भूमि को निम्नलिखित प्रकार से सुधारा जा सकता है :

1. एक एकड़ के खेत को 8 बराबर हिस्सों के प्लाट में बांट लें।

2. प्रत्येक प्लाट के चारों

तरफ 30 सेंटीमीटर ऊंची मेढ़ बनाएं।

3. ध्यान दें कि सभी प्लाट पूरी तरह से समतल हों।

4. तत्पश्चात् प्लाटों को दो बार 15-15 सेंटीमीटर पानी से भरें। इससे भूमि की 30 सेंटीमीटर गहराई तक पहले के मुकाबले 10 प्रतिशत से भी कम लवण रह जाएंगे।

इस तरह से सुधारी गई लवणीय भूमि में शुरुआत में सहनशील व अर्द्ध सहनशील फसलें जैसे कपास, गेहूं, जौ इत्यादि की फसल उगायें तथा नियमित रूप से अच्छी किस्म के जल से सिंचाई करते रहें ताकि भूमि में मौजूद लवण ऊपरी सतह पर न आने पाये।

क्षारीय व लवणीय क्षारीय भूमि : क्षारीय व लवणीय क्षारीय भूमि में सोडियम एवं कैल्शियम के कार्बोनेट एवं बाई कार्बोनेट लवणों की अधिकता पाई जाती है। बाई कार्बोनेट लवण कार्बोनेट लवणों की तुलना में अधिक घुलनशील होते हैं। बाई कार्बोनेट लवणों की अधिकता लवणीय-क्षारीय भूमि को जन्म देती है, जबकि कार्बोनेट लवणों की अधिकता क्षारीय भूमि की समस्या पैदा करती है। चूंकि बाई कार्बोनेट लवण घुलनशील होते हैं, ये सिंचाई पानी के साथ घुलन कर मिट्टी की निचली सतह में चले जाते हैं और इस प्रकार कुछ समय पश्चात् लवणीय क्षारीय भूमि भी क्षारीय भूमि की तरह

व्यवहार करती है। क्षारीय भूमि का पी.एच. मान 8.5 से ज्यादा होता है, इनकी विद्युत चालकता 4.5 डे.सी./मीटर से कम होती है तथा विनिमयशील सोडियम 15 प्रतिशत से अधिक होता है। इस प्रकार की भूमि को निम्नलिखित तरीके से सुधारा जा सकता है :-

1. एक एकड़ के खेत को 8 बराबर हिस्सों प्लाट में बांट लें।

2. प्रत्येक प्लाट के चारों तरफ 30 सेंटीमीटर ऊंची मेढ़ बनाएं।

3. ध्यान दें कि सभी प्लाट पूरी तरह से समतल हों।

4. घुलनशील कार्बोनेट की अधिक मात्रा को कम करने के लिए खेत में 20 सेंटीमीटर उच्च गुणवत्ता का ताजा पानी भरें व रिसने दें।

5. जब खेत में बत्तर आ जाए, तो भूमि की ऊपरी 0-15 सेंटीमीटर परत के लिए कुल सिफारिश के 50 प्रतिशत जिप्सम पाऊंडर को प्रति एकड़ समान रूप से बिखेर दें।

6. जिप्सम को भूमि की सतह पर बिखेरने के बाद 10 सेंटीमीटर गहरी जुताई करके इसको मिट्टी में मिला दें। तत्पश्चात् इस खेत में उच्च गुणवत्ता वाले पानी से 15 सेंटीमीटर गहरी सिंचाई करें।

अतः लवणीय भूमि का उच्च गुणवत्ता के पानी से सिंचाई करके व घुलनशील लवणों को भूमि की निचली सतह में धकेल कर तथा क्षारीय भूमि को जिप्सम के प्रयोग से सुधारा जा सकता है। किसान भाईयों से अनुरोध है कि मिट्टी की गुणवत्ता की जांच के लिए समय-समय पर निकटतम राज्य कृषि विश्वविद्यालय या अन्य सरकारी या गैर-सरकारी संस्थान की मिट्टी परीक्षण प्रयोगशाला से मिट्टी की नियमित जांच करवाएं। यह जांच न केवल जिप्सम की सही मात्रा के बारे में जानकारी देगी बल्कि आपके खेत की मिट्टी की गुणवत्ता के अनुसार फसलों के चुनाव खाद एवं अन्य उर्वरकों की मात्रा व फसल प्रबंधन से संबंधित विस्तृत जानकारी उपलब्ध करवाएगी।

घर लाएं प्राकृतिक ठंडक

अप्रैल का महीना आते ही घर का वातावरण भी गर्म होने लगता है। इस समय सीलिंग पंखे तक असरदार नहीं लगते। ऐसे में, कमरों में पौधे लगाकर घर को प्राकृतिक तरीके से ठंडा किया जा सकता है।

स्नेक प्लांट : यह हवा को शुद्ध करता है। इसे बहुत कम पानी की आवश्यकता होती है। कमरे के तापमान को कम करने में यह बेहद प्रभावी है।

सिंगोनियम : यह पौधा हवा से कई तरह के विषैले तत्वों को हटाता है। यह कम रोशनी में भी अच्छी तरह पनपता है। इसे खिड़की के पास रखना बेहतर होता है।

प्रेयर प्लांट : यह पौधा वायु शुद्धीकरण के गुणों के लिए जाना जाता है। यह विषैले तत्वों को दूर करने और घर के अंदर की हवा की गुणवत्ता सुधारने में मदद करता है।

एलोवेरा : यह गर्मी कम करता है और हवा से विषैले पदार्थों को हटाकर ठंडक बढ़ाता है। एलोवेरा रात में ऑक्सीजन छोड़ता है, जिससे कमरे में ताज़गी व ठंडक महसूस होती है।

जेड प्लांट : यह हवा को शुद्ध करता है और तनाव कम करने में मदद करता है। हालांकि, यदि घर में छोटे बच्चे या पालतू हैं, तो इसे उनकी पहुंच से दूर रखें।



पीस लिली : यह हवा को शुद्ध करता है व नमी बनाए रखता है, जिससे ठंडक महसूस होती है। इसे ड्राईंग रूम व बेडरूम दोनों जगह रखा जा सकता है। यह कम रोशनी वाली जगहों के लिए बेहतरीन है।

जी प्लांट : यह कम रोशनी और कृत्रिम रोशनी में भी अच्छी तरह पनपता है। इसे पानी की आवश्यकता कम होती है, इसलिए मिट्टी सूखने के बाद ही पानी दें।



एग्लोनिमा : यह पौधा घर के अंदर के वातावरण से टॉक्सिन्स को सोखकर हवा को साफ करता है। यह कम रोशनी वाले कोनों, बेडरूम या ऑफिस के लिए उपयुक्त है।

क्रोटन : यह पौधा हवा को शुद्ध करने के साथ-साथ गर्मी को सोख कर ठंडक देने में मदद करता है। इसे घर में कहीं भी रखा जा सकता है।

स्पाइडर प्लांट : यह हवा को शुद्ध करता है और कई हानिकारक तत्वों को हटाकर ऑक्सीजन स्तर बढ़ाता है। यह कम रोशनी में भी तेजी से बढ़ता है।

इनका रख-रखाव भी जानें :

* अधिकांश इंडोर पौधों को सीधी धूप के बजाय अप्रत्यक्ष रोशनी पसंद होती है।

* पानी तभी दें, जब मिट्टी की ऊपरी परत सूख जाए, क्योंकि ज्यादा पानी से जड़ें सड़ सकती हैं।

* पौधों के लिए अच्छी जल निकासी वाली मिट्टी का उपयोग करें।

* स्नेक प्लांट और मनी प्लांट जैसे पौधों में हर 2-3 सप्ताह में तरल खाद दें।

* पत्तियों पर जमी धूल को समय-समय पर साफ करें।

* पौधों को घना बनाए रखने के लिए सूखी या पीली पत्तियों को समय-समय पर काटते रहें।

* कीड़ों की नियमित जांच करें। साथ ही जरूरत पड़ने पर पौधों को अलग रखें।

* नीम के पानी का छिड़काव करने से कीड़े दूर रहते हैं।

* हर हफ्ते गमलों को थोड़ा घुमाएं, ताकि पौधों को हर दिशा से रोशनी मिल सके।

— आर.एस. यादव, बागवानी विशेषज्ञ

उच्च गुणवत्ता की गोबर खाद कैसे तैयार करें?

गोबर की खाद का मतलब पशुओं के गोबर, मूत्र, बचा हुआ घास व पशुओं के शैड से निकाले हुए कचरे के विघटित मिश्रण से है। औसतन अच्छी तरह से विघटित गोबर की खाद में 0.5 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.2 प्रतिशत K₂O होता है। भारत में गोबर का एक बड़ा हिस्सा गोबर केक में परिवर्तित होता है, जो ईंधन के रूप में प्रयोग किया जाता है और पशुओं का मूत्र शैड की मिट्टी या कच्चे फर्श द्वारा सोख लिया जाता है। इस तरह पशुओं के गोबर और मूत्र का एक बड़ा हिस्सा बर्बाद हो जाता है। बाकी बचा हुआ गोबर और मूत्र मिला हुआ शैड का कूड़ा व पशुओं के बचे हुए चारे के मिश्रण को आमतौर पर तेज़ धूप और भारी बारिश के सम्पर्क में छोड़ दिया जाता है। इस दौरान गोबर मूत्र में मौजूद पोषक तत्व लीचिंग और वाष्पीकरण के द्वारा खो जाते हैं। खुले में पड़ा गोबर व कचरे का मिश्रण उच्च तापमान पर तेज़ी से विघटित होता है और उसमें निहित पोषक तत्वों के जटिल कार्बनिक रूप अकार्बनिक रूप में बदल जाते हैं, जोकि अत्याधिक घुलनशील होने के कारण बारिश के पानी के साथ बह जाते हैं। अंत में जो सड़ा हुआ गोबर व कूड़ा कर्कट बचता है, उसे किसान अपने खेत में डालता है, जो खाद का काम ना करके केवल खेत में दीमक तथा खरपतवारों को ही बढ़ावा देता है, अतः खुले में गोबर की खाद तैयार करने का तरीका दोषपूर्ण है।

उच्च गुणवत्ता की गोबर की खाद तैयार करने के लिए दो चीज़ों पर ध्यान देना अति आवश्यक है :

1. पशुओं के गोबर और मूत्र से पोषक तत्वों की हानि कम करें :

* इसके लिए गोबर और मूत्र का संग्रह बेहतर विधि से करें। भंडारण का सबसे सही तरीका बायोगैस संयंत्र है। बायोगैस संयंत्र से निकली गैस ईंधन का एक बेहतर स्रोत है, साथ ही साथ इनसे निकली स्लरी बहुत अच्छी खाद भी है।

* पशुओं के शैड का फर्श सीमेंट से बना हो, ताकि लीचिंग से होने वाले नुकसान से बचा जा सके।

* पशु के मूत्र में गोबर से अधिक पोषक तत्व होते हैं, इसलिए मूत्र को अवशोषित करने के लिए पर्याप्त मात्रा में कार्बनिक पदार्थ का उपयोग किया जाना चाहिए। उपलब्धता के अनुसार गेहूँ का भूसा, धान की पराली, सरसों का भूसा, बाजरे की कड़वी आदि को शैड के फर्श पर अच्छे

से फैला दें।

* मूत्र और गोबर का यूरिया एंजाइम द्वारा अमोनियम कार्बोनेट में विघटित हो जाता है, जो बहुत अस्थिर होता है और अमोनिया, कार्बन डाईऑक्साइड और पानी में बदल जाता है। इस प्रकार



यूरिया बहुत जल्द अमोनिया के रूप में उड़ जाती है। इस हानि को रोकने के लिए रासायनिक परिरक्षकों जैसे जिप्सम या सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग किया जा सकता है। ये रासायनिक परिरक्षक अमोनियम कार्बोनेट को अमोनियम सल्फेट/अमोनियम फॉस्फेट में परिवर्तित करके अमोनिया के नुकसान को कम करते हैं, साथ ही साथ खाद में कैल्शियम, सल्फर व फास्फोरस की वृद्धि करते हैं। पशुओं के शैड में फर्श पर बिछाए जाने वाले कार्बनिक पदार्थ पर सिंगल सुपर फास्फेट या जिप्सम को छिड़कने पर पशुओं के मूत्र में मौजूद यूरिया के नुकसान को रोका जा सकता है।

2. खाद तैयार करने का बेहतर तरीका अपनाएं : विभिन्न प्राकृतिक व अप्राकृतिक कारणों से होने वाले पोषक तत्वों के नुकसान से पूरी तरह बचना व्यवहारिक रूप से असंभव है, लेकिन खाद को बनाने की बेहतर विधि पद्धति का पालन करके इसे कम किया जा सकता है। सी.एन. आचार्य द्वारा अनुशासित ट्रेच विधि से गोबर की खाद तैयार करना एक उन्नत पद्धति है, जिसमें उच्च गुणवत्ता की खाद तैयार की जा सकती है। सबसे पहले किसी ऊंचे स्थान पर जहां बारिश का पानी इकट्टा ना हो, वहां एक या दो खाईयां बनाएं। इन खाईयों की लंबाई 6 से 7.5 मीटर, चौड़ाई 1.5 से 2 मीटर और गहराई 1 मीटर तक होनी चाहिए। गोबर की खाद को तेज़ धूप और बारिश से बचाने के लिए खाईयों के ऊपर छत का इंतजाम होना भी जरूरी है। उपलब्ध कूड़े कचरे को पशुओं के शैड के फर्श पर समान रूप से फैलाया जाता है, ताकि पशुओं का मूत्र

इसमें अवशोषित हो सके। अगली सुबह गोबर व मूत्र अवशोषित कचरे को खाई में फैलायें। पहले एक छोर से शुरू करते हुए खाई का एक भाग (लगभग एक मीटर) दैनिक संग्रह से भरें। जब यह भाग

जमीनी स्तर से 45-60 सेंटीमीटर की ऊंचाई तक भर जाए, तो इसे एक गुंबद का आकार देते हुए गोबर के घोल से प्लास्टर कर दें। इस प्रक्रिया को जारी रखते हुए खाई को पूरा भरें और प्लास्टर कर दें। अब दैनिक संग्रह को दूसरी खाई में इकट्टा करें और प्रक्रिया दोहराते रहें। प्लास्टर करने के चार-पांच महीने बाद खाद उपयोग के लिए तैयार हो जाती है। यदि पशुओं का मूत्र अवशोषित ना किया जा सके, तो इसे किसी खड्डे में एकत्रित करके गोबर के साथ मिलाएं परन्तु मूत्र को व्यर्थ ना जाने दें। आंशिक रूप से सड़ी हुई खाद को फसलों की बुवाई से तीन-चार सप्ताह पहले डालें, परन्तु पूरी तरह सड़ी खाद को फसल की बुवाई से 2 या 3 दिन पहले ही डालें। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय की ओर से 6 टन प्रति एकड़ गोबर की खाद की सिफारिश के साथ ही साथ किसान भाईयों को यह भी सलाह है कि गोबर की खाद हमेशा रबी फसलों में ही डालें, क्योंकि खरीफ फसलों की बुवाई के समय तापमान अधिक होने के कारण व बारिश के सम्पर्क में आने पर पोषक तत्व वाष्पीकरण और लीचिंग द्वारा खो जाते हैं। रबी फसलों में डालने पर खाद का अच्छा प्रभाव देखने को मिलता है। सभी प्रकार की सब्जियां, फलों के पौधे, चावल, गेहूँ, गन्ना आदि फसलों में गोबर की खाद डालने पर अच्छी पैदावार मिलती है, इसी के साथ-साथ मुदा के भौतिक, रासायनिक व जैविक गुणों में भी सुधार होता है।

शेष पृष्ठ 3 की अनाज का सुरक्षित भंडारण

भंडारण अवधि में समय-समय पर हवा का आवागमन करते रहना चाहिए। अनाज के सुरक्षित भंडारण हेतु निम्न सावधानियां बरतनी चाहिए :

* अधिक गीली अवस्था में अनाज का भंडारण नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे अनाज में

रोक दें।

* ध्यान रखें कि अनाज की बोरियां छत से एकदम सट्टा कर ना रखी गई हों।

* भंडारण वाली जगह ऊँची होनी चाहिए, इसमें बारिश का पानी या अन्य पानी नहीं जाना चाहिए।



फफूंद लग सकती है, जिससे वह सड़ जाएगा।

* कटाई के बाद अनाज को हल्की धूप में सुखाना अनिवार्य है। यदि तेज़ धूप में इसको सुखाएंगे, तो अनाज में दरारें पड़ जाएंगी।

* अनाज को बोरी में रखने से पहले यह सुनिश्चित करें कि बोरी कीटों आदि से मुक्त है, अगर नहीं है, तो इसे साफ करके अनाज डालें। अनाज रखने हेतु नई बोरियों का प्रयोग करें। यदि बोरियां पुरानी हैं, तो उन्हें गर्म पानी में 15 मिनट तक भिगोएं या फिर उन्हें 40 मिलीलीटर मैलाथियान 50 ई.सी. या 40 ग्राम डेल्टामेथिन 2.8 ई.सी. की 38.0 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के घोल में 10 से 15 मिनट तक भिगोकर छाया में सुखा

* अनाज का भंडारण करने से पहले भंडार गृह को बंद कर देना चाहिए, जिससे उसमें नमी ना संरक्षित हो सके।

* भंडार गृह की लिपाई पुताई आदि कर लेनी चाहिए, जिससे इनकी दरारों में कीटों को आश्रय ना मिल सके।

* भंडार गृह के रोशनदान और खिड़कियां ऐसी होनी चाहिए, जिसको जरूरत के मुताबिक खोला या बंद किया जा सके।

* भंडारण करने से पहले यह जांच कर लें कि नए बीज में कीड़ा लगा है या नहीं। यदि लगा है, तो भंडार गृह में रखने से पूर्व उसे एल्यूमीनियम फास्फाइड द्वारा प्रद्युमित कर लें।

* भंडार गृह में कृषि रसायन नहीं रखने चाहिए, क्योंकि ये खाद



अनाज के सुरक्षित भंडारण के लाभ

- ◆ सुरक्षित भंडारण से किसान को पैदावार का पूरा लाभ मिलता है।
- ◆ सुरक्षित भंडारण से परिवार को स्वच्छ एवं गुणवत्ता युक्त खाना मिलता है।
- ◆ अच्छे सुरक्षित भंडारित अनाज के बाज़ार भाव भी उपयुक्त मिलते हैं।
- ◆ किसान अपना बीज खुद सुरक्षित कर सकता है।
- ◆ अनाज को संग्रहित कर स्वच्छ परिवहन किया जा सकता है।
- ◆ कम चलती लागत एवं कम श्रम आवश्यकता : लंबे समय तक अनाज को स्टोर करना संभव है व कम भूमि क्षेत्र की आवश्यकता पड़ती है।

ले और इसके बाद उनमें बीज या अनाज भरें।

* बोरियों को नमी से बचाने के लिए बोरी के नीचे पॉलीथीन की चादर, बांस की चटाई व लकड़ी के तखते आदि इस्तेमाल किए जा सकते हैं, ताकि उनमें नमी का प्रवेश ना हो सके।

* अनाज को भंडारित करने से पहले भंडार गृह को मैलाथियान घोल से उपचारित कर लेना चाहिए एवं भंडारण के लिए प्रयोग होने वाले कमरे, गोदाम या पात्र इत्यादि के सुराखों एवं दरारों को यथोचित गीली मिट्टी या सीमेंट से भर कर

गुणवत्ता में कमी करते हैं।

* भंडार गृह पशुशाला से थोड़ी दूर होना चाहिए तथा आटा चक्की भी इस गृह में नहीं रखने चाहिए।

* आवश्यकता अनुसार इस भंडार गृह से भंडारित वस्तु को उपयोग में ली जाने की सुविधा होनी चाहिए।

* भंडार गृह को 15 दिन में एक बार अवश्य देखें। बीज में कीट की उपस्थिति, फर्श व दीवारों पर जीवित कीट दिखाई देने पर आवश्यकता अनुसार कीटनाशी का छिड़काव करें।

हरियाणा की मिट्टियों में पोषक तत्वों का स्तर व अनुपात बहुत बिगड़ चुका है। इसके कुछ मुख्य कारण एक ही फसल-चक्र का अनुपालन, देसी खादों का प्रयोग ना करना, फसलों के फानों को खेत में जला देना, रासायनिक खादों का अंधाधुंध उपयोग आदि हैं। बढ़ती जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए रासायनिक खादों पर निर्भरता भी आवश्यक है, इसलिए रासायनिक खादों का उचित मात्रा में प्रयोग बहुत ज़रूरी है और किसी भी खेत में उचित मात्रा का अनुमान उस खेत की मिट्टी की जांच के बाद ही लगाया जा सकता है।



मिट्टी की जांच : यह एक मिट्टी के नमूने की रासायनिक जांच है, जिससे उस मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों की मात्रा की जानकारी मिलती है। इस जांच का उद्देश्य भूमि की उर्वरकता मापना तथा यह पता करना है कि मिट्टी में कौन से तत्वों की कमी है।

मिट्टी की जांच क्यों : मिट्टी पोषक तत्वों का भंडार है एवं पौधों को अपना जीवन-चक्र पूरा करने के लिए आवश्यक 17 पोषक तत्व मिट्टी से ही मिलते हैं।

मुख्य तत्व : कार्बन हाइड्रोजन, ऑक्सीजन, नाइट्रोजन, फास्फोरस, पोटेश, कैल्शियम, मैग्नीशियम व सल्फर।

सूक्ष्म तत्व : जिंक, आयरन, तांबा, मैंगनीज, मोलिब्डेनम, बोरॉन, क्लोरीन व निकेल।

लगातार फसल उत्पादन में वृद्धि एवं बढ़ती संघन खेती के परिणाम स्वरूप इन पोषक तत्वों का ह्रास भी बढ़ रहा है। अतः किसी भी खेत की मिट्टी में इन पोषक तत्वों का स्तर व आपसी अनुपात जानने के लिए उस मिट्टी की जांच आवश्यक है।

मिट्टी की जांच कब :

मिट्टी व पानी की जांच : महत्व व तकनीक

परीक्षण में कितनी ही सावधानियां बरत लें, इसकी सिफारिश सही नहीं हो सकती है। अतः मिट्टी का नमूना लेते समय निम्न बातों का ध्यान रखें :

* यदि एक खेत में फसल की बढ़वार में या ज़मीन के गठन में, रंग व ढलान में अंतर हो या फसल अलग-अलग बोयी जानी हो या खेत प्रबंधन में अंतर हो तो हर भाग से अलग नमूना लें। अधिक से अधिक 5 एकड़ तक ही एक नमूना लिया जा सकता है।

* नमूना खाद के ढेर, पेड़ों, मेड़ों, ढलानों व रास्तों के पास से ना लें।

* मृदा के नमूने को साफ जगह पर रखें व इसे किसी भी प्रकार से दूषित ना होने दें। साफ औजारों से नमूना लें व इसे किसी साफ थैली में डालें। ध्यान रहे कि खाद, उर्वरकों या अन्य रसायनों

* सूक्ष्म तत्वों की जांच के लिए नमूना लेते समय धातु से बने औजार व बर्तनों का प्रयोग ना करें, क्योंकि इसमें लौहा, जस्ता



व तांबा होता है। जहां तक संभव हो, प्लास्टिक या लकड़ी के औजार काम में लें।

* एक एकड़ में 5-6 अलग-अलग जगहों से नमूने लें व इन्हें मिला कर एक संयुक्त नमूना बनाएं। नमूना लेने से पहले ज़मीन से घास-फूस हटा लें व कस्सी या खुरपी से V-आकार का कट ज़मीन की सतह से 15 सेंटीमीटर की गहराई तक लगाएं। इसकी एक तरफ से 2-3 सेंटीमीटर मोटी परत ऊपर से नीचे तक उतार कर साफ बाल्टी या ट्रे में डाल दें। अब इस नमूने को फर्श पर फैलाएं व चार भागों में बांटें। आमने-सामने भागों को मिला दें व बचे हुए दो भागों को हटा दें। इस प्रतिक्रिया को तब तक दोहराएं, जब तक नमूना लगभग 500 ग्राम बच जाए। यह नमूना साफ थैली में डाल कर उस पर सूचना पत्र संलग्न करें। इस प्रकार तैयार किया गया नमूना पूरे खेत का प्रतिनिधित्व करेगा। नमूने के साथ सूचना पत्रक जिसमें किसान का नाम व पूरा पता, खेत नंबर या किला नंबर, नमूना लेने की तिथि, अगली ली जाने वाली फसल का नाम, पिछले तीन वर्ष की फसलों का ब्यौरा व कोई अन्य समस्या आदि का विवरण दें व थैली में रख कर थैली का मुंह अच्छे से बांध दें और नमूना नजदीक मृदा व पानी परीक्षण प्रयोगशाला में भिजवाएं।

भूमि सुधार के लिए नमूना कैसे लें : लवणीय या क्षारीय मिट्टियों के सुधार के लिए भी मिट्टी की जांच अति आवश्यक

है। इस प्रकार की मिट्टियों में नमूना लेने के लिए एक एकड़ में 3 फीट गहरे एक या दो गड्डे खो दें। इन गड्डों में मीटर रॉड या

फीते से 6" (15 सेंटीमीटर), 12" (30 सेंटीमीटर), 23" (60 सेंटीमीटर) और 36" (90 सेंटीमीटर) गहराई पर निशान लगाएं। अब लगभग 2 सेंटीमीटर मोटी मिट्टी की परत विभिन्न गहराइयों जैसे 0 से 15 सेंटीमीटर, 15 से 30

सेंटीमीटर, 30 से 60 सेंटीमीटर व 60 से 90 सेंटीमीटर से उतारें और अलग-अलग थैलियों में रखें। इन थैलियों में भी सूचना पत्रक पूरी जानकारी लिख कर डालें व एक बात का विशेष ध्यान रखें कि हर नमूने की गहराई संबंधित पत्रक पर ज़रूर लिखें। यदि मिट्टी की सतह पर सफेद नमक की परत बन गई है, तो उस परत का भी अलग नमूना लें व सभी नमूने जांच प्रयोगशाला में जमा करवाएं।

बाग लगाने से पहले नमूना कैसे लें : बांछित एकड़ में एक या दो 6 फुट (180 सेंटीमीटर) गहरे गड्डे खो दें और अलग-अलग गहराइयों जैसे 0-15 सेंटीमीटर, 15-30 सेंटीमीटर, 30-60 सेंटीमीटर, 60-90 सेंटीमीटर, 90-120 सेंटीमीटर, 120-150 सेंटीमीटर व 150-180 सेंटीमीटर तक सात नमूने लें। ध्यान रहे इन सात नमूनों में 250-300 ग्राम मिट्टी ही लें व अलग-अलग थैलियों में डालें। हर नमूने के सूचना पत्रक पर बाकी जानकारी के साथ गहराई की जानकारी भी अवश्य दें व सभी नमूने जांच प्रयोगशाला में जमा करवाएं।

पानी की जांच

किसान जब भी कोई नया बोर करवाए तो उस पानी की भी जांच अवश्य करवाएं व पानी की गुणवत्ता जैसे फसलों व ज़मीन के लिए अच्छा, लवणीय, क्षारीय या लवणीय-क्षारीय सुनिश्चित करें। यदि जांच के बाद किसान को ट्यूबवैल लगाने की सलाह दी जाए, उसके बाद भी उस ट्यूबवैल के पानी की साल में दो बार खरीफ व रबी फसलों की बुवाई से पहले अवश्य जांच करवाएं। पानी का नमूना लेने से पहले ट्यूबवैल को 2 से 3 घंटे तक चलाएं और उसके बाद 500-700 मिलीलीटर पानी साफ बोतल में भर लें। बोतल पर सूचना पत्रक लगाएं व उस पर किसान का नाम, पिता का नाम, ट्यूबवैल नं., खेत की मिट्टी की बनावट और पता लिखें। एक बात का ध्यान रखें कि जब भी किसान अपने ट्यूबवैल के पानी की जांच रिपोर्ट लेने जाए, तब अपने साथ उसी पानी की पुरानी जांच रिपोर्ट साथ लेकर जाएं ताकि पानी की गुणवत्ता में होने वाले परिवर्तन का उचित आंकलन किया जा सके।

मृदा परीक्षण के उद्देश्य

1. मृदा की उर्वरा शक्ति की पहचान करके फसल व किस्म विशेष के लिए पोषक तत्वों की संतुलित मात्रा की सिफारिश करना और यह मार्गदर्शन करना कि उर्वरक व खाद का प्रयोग कब व कैसे करें।
2. मृदा में लवणता, क्षारीयता तथा अम्लीयता की समस्या की पहचान व जांच करके भूमि सुधारकों के प्रकार व मात्रा की सिफारिश कर भूमि को कृषि योग्य बनाना।
3. किसी गांव, ब्लॉक, जिला व राज्य की मृदाओं की उर्वरा शक्ति को मानचित्र में प्रदर्शित करना तथा उर्वरकों की आवश्यकता का पता लगाना। इस प्रकार की सूचना प्रदान कर उर्वरक निर्माण, वितरण एवं उपयोग में सहायता करना।



आमतौर पर उगाई जाने वाली फसलों के लिए तीन वर्षों में एक बार मिट्टी की जांच करवाएं। मिट्टी का नमूना फसल कटाई के बाद जब खेत खाली हो, तब लें और ध्यान रहे कि नमूना अगली फसल की बुवाई से 15-30 दिन पहले प्रयोगशाला में भेज दें।

मिट्टी की जांच कैसे : मिट्टी की जांच के लिए सबसे पहले मिट्टी का नमूना लिया जाता है। मिट्टी का नमूना इस ढंग से लें कि वह पूरे एकड़ का प्रतिनिधित्व करे। यदि नमूना सही तरीके से ना लिया जाए, तो भले ही मृदा

की थैलियों में नमूना ना डालें।

* मिट्टी का नमूना फसल बुवाई से एक महीने पहले लेकर जांच के लिए भेज दें, ताकि समय पर आपको जांच रिपोर्ट मिल सके और उसी आधार पर खाद या सुधारक मिट्टी में डाल सकें।

* यदि खड़ी फसल में पोषक तत्वों की कमी के लक्षण दिखाई दें तो जांच के लिए नमूना पौधों की कतारों के बीच में से लें।

* जिस खेत में कंपोस्ट, खाद, चूना, जिप्सम या अन्य कोई भूमि सुधारण तत्काल डाला गया हो, उस खेत में नमूना ना लें।

डॉ. अनु कुमार

छिपी हुई भूख का अर्थ है शरीर में आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी, जैसे आयरन, विटामिन बी12, विटामिन डी, जिंक, आयोडीन और फोलिक एसिड। यह कमी थकान, बार-बार संक्रमण, कमजोरी, ध्यान की कमी, हड्डियों की समस्या और रोग प्रतिरोधक क्षमता में गिरावट जैसे लक्षणों के रूप में दिखाई देती है।

आज का भारत एक विसंगति दौर से गुजर रहा है। एक ओर देश तेजी से आर्थिक प्रगति कर रहा है, बाजारों में खाद्य सामग्री की कोई कमी नहीं है और स्वास्थ्य सेवाएं भी विस्तारित हो रही हैं। लेकिन दूसरी ओर, एक गंभीर समस्या चुपचाप समाज में आकार ले रही है - पोषण की कमी, जिसे अक्सर छिपी हुई भूख कहा जाता है।

छिपी हुई भूख का अर्थ है शरीर में आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी, जैसे आयरन, विटामिन बी12, विटामिन डी, जिंक, आयोडीन और फोलिक एसिड। यह कमी थकान, बार-बार संक्रमण, कमजोरी, ध्यान की कमी, हड्डियों की समस्या और रोग प्रतिरोधक क्षमता में गिरावट जैसे लक्षणों के रूप में दिखाई देती है। भारत में आयरन की कमी से होने वाला एनीमिया आज भी महिलाओं और किशोरियों में आम है। शहरी आबादी में विटामिन बी12 की कमी तेजी से बढ़ रही है, जिसका एक कारण बदलती भोजन शैली और पोषक तत्वों का ठीक से अवशोषण न होना है। धूप की प्रचुरता के बावजूद विटामिन डी की कमी एक विडंबना बन चुकी है, जो हड्डियों, प्रतिरक्षा तंत्र और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। जिंक और आयोडीन की कमी बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास को बाधित करती है।

पोषण को लेकर सबसे आम भ्रांति यह है कि भरपूर खाना खाने का मतलब अच्छा पोषण है। आज का आधुनिक भोजन -



पोषक तत्वों का अभाव

राष्ट्रीय स्वास्थ्य के लिए चुनौती बनी छिपी भूख

जो अधिकतर परिष्कृत अनाज, पैकेज्ड फूड और मीठे स्नैक्स पर आधारित है - कैलोरी तो देता है, लेकिन आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व नहीं। हमारी पारंपरिक भोजन पद्धतियां, जिनमें मोटे अनाज, दालें, मौसमी सब्जियां और किण्वित खाद्य पदार्थ शामिल थे, धीरे-धीरे पीछे छूटती जा रही हैं।

दरअसल, भोजन में गुणवत्ता के असंतुलन का सीधा असर स्वास्थ्य पर पड़ता है। पोषण की कमी से रोग प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है, जिससे संक्रमण जल्दी होते हैं और ठीक होने में समय लगता है। मधुमेह और हृदय रोग जैसे जीवनशैली से जुड़े रोगों की गंभीरता भी बढ़ जाती है। बच्चों में यह शारीरिक वृद्धि और सीखने की क्षमता को प्रभावित करती है, जबकि कामकाजी वर्ग में थकान और उत्पादकता में कमी लाती है। बुजुर्गों में यह कमजोरी और

जटिलताओं को बढ़ावा देती है।

सरकार ने पोषण अभियान, मिड-डे मील, आयरन-फोलिक एसिड सप्लीमेंटेशन और खाद्य सुरक्षा योजनाओं के माध्यम से सराहनीय प्रयास किए हैं। लेकिन केवल दवाइयों और सप्लीमेंट्स के भरोसे इस समस्या का स्थायी समाधान संभव नहीं है। दीर्घकालिक समाधान के लिए जरूरी है कि पोषण भोजन के माध्यम से, सुरक्षित और टिकाऊ तरीके से मिले। यहां पर बायोटेक्नोलॉजी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। अक्सर बायोटेक्नोलॉजी को जटिल प्रयोगशालाओं तक सीमित विज्ञान माना जाता है, जबकि वास्तव में यह हमारे दैनिक जीवन से गहराई से जुड़ी हुई है। बायोफोर्टिफाइड फसलें, जिनमें प्राकृतिक रूप से अधिक आयरन, जिंक या विटामिन मौजूद होते हैं, इसका एक उदाहरण है। ऐसे खाद्य पदार्थ बिना खान-पान की आदत बदले बेहतर पोषण

प्रदान कर सकते हैं।

इसके अलावा, किण्वन और लाभकारी सूक्ष्मजीवों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है - जो हमारी पारंपरिक खाद्य संस्कृति का हिस्सा रहे हैं, जैसे दही, छाछ, इडली, डोसा और किण्वित पेय। आधुनिक बायोटेक्नोलॉजी इन परंपराओं को वैज्ञानिक आधार देकर पोषक तत्वों के बेहतर अवशोषण और आंतों के स्वास्थ्य को सुधारने में मदद करती है। फंक्शनल फूड्स और न्यूट्रास्यूटिकल्स का क्षेत्र भी संभावनाओं से भरा है, बशर्ते इन्हें जिम्मेदारी और किफायती तरीके से विकसित किया जाए। ये उत्पाद विलासिता नहीं, बल्कि विशिष्ट पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने के साधन बन सकते हैं - खासकर कमजोर वर्गों के लिए।

सबसे महत्वपूर्ण पहलू है जागरूकता। कई बार पोषण की कमी का निदान नहीं हो पाता क्योंकि इसके लक्षणों को सामान्य

कमजोरी समझ लिया जाता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य संवाद में अब केवल वजन और कैलोरी नहीं, बल्कि सूक्ष्म पोषक तत्वों और संतुलित आहार पर भी जोर दिया जाना चाहिए। किशोरों, गर्भवती महिलाओं और कामकाजी वर्ग के लिए पोषण शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। नीति स्तर पर, यदि बायोटेक्नोलॉजी आधारित पोषण समाधानों को सरकारी योजनाओं से जोड़ा जाए, जैसे बायोफोर्टिफाइड अनाज, स्कूल भोजन में पोषण संवर्धन - तो परिणाम कहीं अधिक प्रभावी हो सकते हैं। यह भी आवश्यक है कि बायोटेक्नोलॉजी नैतिकता, पारदर्शिता और सुलभता के साथ आगे बढ़े। छिपी हुई भूख केवल पोषण की समस्या नहीं, बल्कि राष्ट्रीय विकास की चुनौती है।

आज आवश्यकता है कि पोषण को केवल स्वास्थ्य विभाग की जिम्मेदारी मानकर न देखा जाए, बल्कि इसे शिक्षा, कृषि, विज्ञान और सामाजिक चेतना से जोड़कर समझा जाए। जब तक परिवार स्तर पर यह समझ नहीं बनेगी कि संतुलित आहार क्या है और पोषक तत्व क्यों आवश्यक हैं, तब तक योजनाएं और तकनीकें भी सीमित प्रभाव ही डाल पाएंगी। पोषण साक्षरता को स्कूल पाठ्यक्रम, सामुदायिक कार्यक्रमों और जनसंचार माध्यमों के माध्यम से व्यापक रूप से फैलाना होगा। साथ ही, खाद्य उद्योग और वैज्ञानिक संस्थानों को मिलकर ऐसे समाधान विकसित करने होंगे। बायोटेक्नोलॉजी आधारित नवाचार तभी सफल होंगे जब वे आम आदमी की थाली तक पहुंचें। इसके लिए नीति-निर्माताओं, वैज्ञानिकों, शिक्षकों और चिकित्सकों के बीच बेहतर समन्वय आवश्यक है। स्वस्थ नागरिक ही सशक्त राष्ट्र की नींव होते हैं। पोषण में निवेश दरअसल देश के भविष्य में निवेश है और इस निवेश का लाभ आने वाली पीढ़ियां अवश्य महसूस करेंगी।

लेखक यूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी से जुड़े हैं।

पंजाब में फलों का रकबा 3.84 प्रतिशत बढ़ा, केले के उत्पादन में सबसे ज्यादा 11.81 फीसदी उछाल

पंजाब में पारम्परिक गेहूं-धान आधारित खेती से हट कर बागवानी फसलों की ओर किसानों का रुझान तेजी से बढ़ रहा है। वर्ष 2024-25 के दौरान राज्य में फलों का रकबा

84 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई है। इसी अवधि में राज्य में फलों का कुल उत्पादन 23.06 लाख मीट्रिक टन से बढ़ कर 24.10 लाख मीट्रिक टन हो गया, जो 4.

मोहिंदर भगत ने कहा कि पंजाब सरकार राज्य के किसानों को बागवानी फसलों की ओर प्रेरित करने और उनकी आय बढ़ाने के लिए तेजी से काम कर रही है।

उत्पादन भी 4.55 प्रतिशत बढ़ कर 24.10 लाख मीट्रिक टन हुआ



और उत्पादन दोनों बढ़े हैं, जो कृषि विविधीकरण की दिशा में सकारात्मक संकेत माने जा रहे हैं। आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार 2023-24 में 1,03,289 हैक्टेयर में फलों की खेती हो रही थी, जो 2024-25 में बढ़कर 1,07,254 हैक्टेयर तक पहुंच गई। यानी 3.

55 प्रतिशत की वृद्धि है। फलों में केले के उत्पादन में सबसे अधिक 11.81 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। नाशापाती का उत्पादन 9.75 प्रतिशत, अमरूद का 9.53 प्रतिशत, लीची का 5.83 प्रतिशत और आम का 6.56 प्रतिशत बढ़ा है।

पंजाब के बागवानी मंत्री

इसी कारण फलों और सब्जियों का रकबा और उत्पादन दोनों बढ़ रहे हैं।

आय बढ़ेगी, भूजल में सुधार होगा

पंजाब की जलवायु परिस्थितियां किन्नू, संतरा, अमरूद,

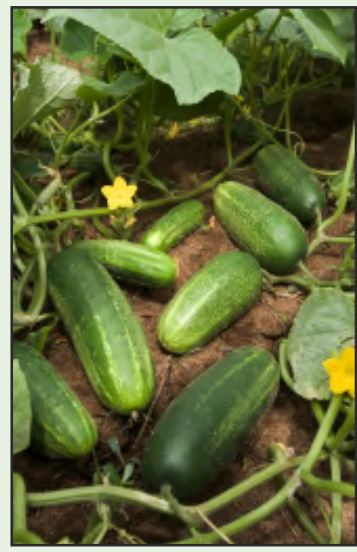
फल	2023-24	2024-25	बढ़ोत्तरी %
अमरूद	13414	14655	9.25
नाशापाती	5189	5664	9.15
आलुबुखारा	606	648	6.93
लीची	4328	4518	4.39
आम	9128	9431	3.32
आड़ू	2939	3034	3.23
आंवला	1000	1028	2.80
बेर	1652	1698	2.78
किन्नू	49005	49933	1.89
संतरा	4287	4354	1.56

(आंकड़े हैक्टेयर में)

नाशापाती, लीची, आम, आड़ू, जैसे फलों की खेती के लिए अनुकूल है। बागवानी क्षेत्र किसानों को पारंपरिक गेहूं-धान चक्र से बाहर निकल कर अधिक आय देने वाली फसलों की ओर बढ़ने का अवसर दे सकता है। इससे किसानों की

आय भी बढ़ेगी और कीटनाशक, खाद आदि से बंजर हो रही धरती भी बचेगी। फलों की ओर रुझान बढ़ने से पंजाब के भूजल स्तर में सुधार की संभावना बढ़ेगी। क्योंकि कई बागवानी फसलें धान की तुलना में कम पानी मांगती हैं।

खीरा वर्गीय फसलों में कीट एवं रोग प्रबंधन



खीरा वर्गीय फसलों पर अंकुरित होने से लेकर कटाई तक विभिन्न प्रकार के कीटों एवं रोगों का प्रकोप होता है। कीटों एवं विभिन्न रोगों के संक्रमण से फसल उत्पादन एवं गुणवत्ता में अत्याधिक मात्रा में नुकसान होता है, जिससे किसानों की आय पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। खीरा वर्गीय फसली (कुकुर्बिटस) जैसे खीरे, ककड़ी, कद्दू, स्ववैश, तरबूज, खरबूजा, करेला, तोरई, लौकी इत्यादि की सफल खेती के लिए कीटों एवं रोगों के प्रभावी और किफायती नियंत्रण के लिए सांस्कृतिक, यांत्रिक, जैविक और रासायनिक विधियों के उपयोग की आवश्यकता होती है।

1. लाल कद्दू बीटल (भुंग) : यह खीरा वर्गीय फसलों का सबसे गंभीर कीट है। यह कीट नारंगी रंग का तथा काफी चमकीला होता है। व्यस्क एवं प्यूपा दोनों ही फसल को प्रभावित



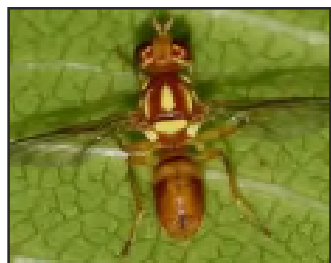
करते हैं। प्यूपा जमीन के पास तने में छेद करता है, जिससे पौधा सूख जाता है और व्यस्क कीट पौधों की पत्तियां खाकर नष्ट कर देता है। इस कीट का प्रकोप बड़े पैमाने पर होता है तथा रातों-रात फसल नष्ट हो जाती है। सामान्यतः लौकी, करेला, तरबूज एवं खरबूजे पर इसका प्रकोप अधिक होता है।

प्रबंधन : 1. मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करें, जिससे कि तेज धूप में अंडे नष्ट हो जाएं।

2. क्रिटीनाइज़ राख की डस्टिंग सबसे सामान्य तरीका है, जिससे लाल कद्दू बीटल नष्ट हो जाता है।

3. कार्बोरिल 50 ई.सी. या डाईक्लोरोफॉस (नुवान, वापोना इत्यादि) का 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के घोल का स्प्रे किया जा सकता है।

2. फल मक्खी : इस कीट का प्रकोप सम्पूर्ण भारत में पाया जाता है। यह मक्खी लाल-भूरे रंग की होती है, जिसके सिर पर काले और सफेद धब्बे पाए जाते हैं। मादा मक्खी नरम, कोमल



फलों में छेद करके फल की सतह के नीचे ऊतकों में अंडे देती है। अंडे से उत्पन्न मैगट फलों के अंदर गुदे को खाकर नष्ट कर देता है, फलस्वरूप फल सड़ने लगता है।

प्रबंधन : 1. जिस खेत में फसल लेनी हो, उसकी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें व तेज धूप में खुला छोड़ दें, जिससे प्यूपा नष्ट हो जाएं।

2. पकने पर निश्चित अंतराल पर फलों को तोड़ते रहें।

3. कीट ग्रसित फलों को इकट्ठा करके नष्ट कर देना चाहिए।

4. प्रभावित क्षेत्र में कार्बोरिल या डिप्टेरेक्स पाऊंडर से फसल पर डस्टिंग से व्यस्क मक्खी को नियंत्रित किया जा सकता है।

5. खेत में बैट ट्रेप का उपयोग इस मक्खी के प्रभावी नियंत्रण है।

3. ऐपीलेक्ना बीटल (भुंग) : यह बीटल हल्के पीले रंग का



सुस्त सा दिखाई देने वाला कीट है। बीटल पत्तियों की नसों के बीच के हिस्से को खाते हैं एवं जाल सा बना देते हैं, जिससे पत्तियां सूख जाती हैं।

प्रबंधन : 1. कीट ग्रसित पत्तियों को इकट्ठा करके गड्डों में दबा दें।

2. कीट लगने पर कार्बोरिल पाऊंडर की डस्टिंग करें। डस्टिंग सुबह के समय करें, इससे कीटनाशी पत्तियों की सतह पर चिपक जाता है और सभी बीटल नष्ट हो जाते हैं।

4. तरबूज का एफिड : इस कीट के व्यस्क छोटे तथा हरे, पीले या काले रंग के होते



हैं। यह पत्तियों एवं तने से रस चूसते हैं, जिससे पत्तियां पीली

पड़ जाती हैं और फसल पैदावार पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

प्रबंधन : 1. फसल पर मैटासिस्टॉक्स नामक कीटनाशी का 0.15 प्रतिशत घोल बना कर 15-15 दिन के अंतराल से छिड़काव करें।

2. रोगोर, न्यूवाक्रोन का 0.2 प्रतिशत के घोल का भी प्रयोग किया जा सकता है।

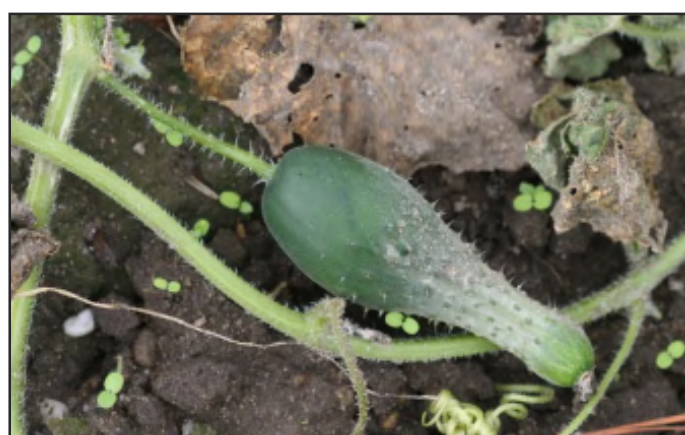
5. फल विगलन रोग : कवक जनित यह रोग, जायद में होने वाली सभी खीरा वर्गीय सब्जियों विशेषकर तोरई, खीरा, लौकी, तरबूज, चिचिंडा और और करेले को प्रभावित करता है। भूमि के सम्पर्क में आने वाले फलों का छिलका नमी के कारण नरम, गहरे हरे रंग का और जल-सिक्त सा दिखने लगता है। इस विगलिन भाग पर कवक रूई के समान जाल विकसित कर देती है। बाद में फल पूर्णतः सड़ जाता है और उसमें एक प्रकार की विशेष गंद आने लगती है।

प्रबंधन : 1. जहां तक संभव हो फलों को भूमि के सम्पर्क में आने से बचाया जाना चाहिए। लौकी, तोरई, खीरा, करेला, चिचिंडा इत्यादि फसलों में लताओं को समुचित सहारा देने की व्यवस्था की जानी चाहिए। शेष फसलों में फल बनना आरम्भ होने पर जमीन पर सूखी घास रख दें, ताकि फल भूमि के सम्पर्क में ना आए।

2. फसल में उचित जल निकास प्रबंधन होना चाहिए।

3. इन्डोथेन एम-45 नामक कवकनाशी का 0.25 प्रतिशत घोल बना कर छिड़काव करना चाहिए।

6. चूर्णी फफूंद (Pow-



dery Mildew) : यह एक बहुत ही प्रचलित बीमारी है, जिसका प्रकोप सम्पूर्ण भारत में लगभग

सभी खीरा वर्गीय फसलों में होता है। इसके लक्षण सबसे पहले पत्तियों और तनों की सतह पर सफेद या धुंधले धूसर, सूक्ष्म आभायुक्त धब्बों के रूप में प्रकट होते हैं। बाद में यह श्वेत चूर्णी पदार्थ समुचे परपोषी पादप को ढंक लेता है। अंतः यह रोग पूरे तने व फलों पर फैल जाता है और फसल सूखने लगती है।

प्रबंधन : 1. फसल में गंधक (सलफेक्स) चूर्ण का भुरकाव किया जा सकता है।

2. कैराथेन नामक रसायन इसके लिए उपयुक्त पाया गया है, इसका 0.05 प्रतिशत घोल बना कर 15-15 दिन के अंतर से छिड़काव किया जा सकता है।

3. कवकनाशी केलिकिसन @ 1.04% और बैलाट @ 0.05% का स्प्रे भी अच्छा परिणाम देता है।

7. डाऊनी मिल्ड्यू (Downy Mildew) : इस रोग में पत्ती की ऊपरी सतह पर पीले या भूरे रंग के धब्बे तथा पत्ती की निचली सतह पर धूसर/बैंगनी धब्बे फफूंद की वृद्धि से दिखाई देते हैं। पौधे की वृद्धि रुक जाती है एवं फल सही से नहीं पक पाते हैं या इनका स्वाद बिगड़ जाता है।

प्रबंधन : 1. प्रभावित पत्तियों



को शीघ्र से शीघ्र तोड़ देना चाहिए, ताकि रोग अन्य पत्तियों पर ना फैले।

2. जल निकास की उचित व्यवस्था करें तथा अति सिंचाई से बचें।

3. रोग के दिखाई देने पर इंडोथेन एम-45 या ब्लाइटॉक्स 0.25 प्रतिशत के घोल का छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

8. विषाणु रोग : कुकुमिस विषाणु साधारणतयाः खीरा वर्गीय सभी फसलों में पाया जाता है। इसके आक्रमण से पत्तियां मुड़ना

वायरस मुख्य रूप से संक्रमित बीज या एफिड्स द्वारा फैलता है।

प्रबंधन : 1. रोग ग्रस्त पौधों को खेत से निकाल कर नष्ट कर देना चाहिए।

2. प्रमाणित बीज कंपनियों से रोग मुक्त बीज प्रयोग में लाना चाहिए।

3. डाइमेथोएट (रोगोर 30 ई.सी.) या मिथाईल पैराथियान 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल कर स्प्रे करने से वाहक कीट (एफिड) को नियंत्रित करके विषाणु रोग से बचा जा सकता है।

9. एन्थ्रेकनोज रोग : कवक जनित यह रोग मुख्यतः तरबूज, खरबूजे एवं ककड़ी में पाया जाता



है। पत्तियों पर हल्के भूरे धब्बे विकसित हो जाते हैं, जो गहरे भूरे एवं लाल इस्केल्ड में बदल जाते हैं। संक्रमित फलों पर गोल या अंडाकार घाव बन जाते हैं, जिससे फल सड़ने लगता है।

प्रबंधन : 1. फसल-चक्र में खीरा वर्गीय कुल के अलावा अन्य फसल का प्रयोग करने से कवक खेत से नष्ट की जा सकती है।

2. रोग ग्रसित फसल के बीज का बुवाई में प्रयोग ना करें।

3. फसल पर रोग का प्रकोप दिखाई देने पर इंडोथेन एम-45 का 0.25 प्रतिशत घोल बना कर छिड़काव करें। इसके अतिरिक्त ब्लाइटॉक्स, क्यूप्रोसाइड, फाईटोलान या बोरडेक्स मिश्रण का भी छिड़काव किया जा सकता है।

10. फ्यूजेरियम म्लानि : इस रोग में कवक अंकुरण के समय बीज तथा पौधे में तने को सड़ा देती है, जिससे पत्तियां पीली पड़ जाती हैं एवं अंतः पौधा सूख जाता है।

प्रबंधन : 1. उचित फसल-चक्र अपनाया जाना चाहिए।

2. बीजों को बाविस्टिन 2.5 ग्राम मात्रा से उपचारित करके बोना चाहिए।

3. रोग रोधी किस्मों को बोया जाना चाहिए।

4. उचित जल निकास का प्रबंधन किया जाना चाहिए।

शुरू हो जाती है तथा पत्ती का आकार छोटा हो जाता है। फल और बीज विकृत हो जाते हैं।

ਆਰਗੈਨਿਕ ਗੁੜ ਉਤਪਾਦਕ



ਨਵੀਂ
ਪੀੜ੍ਹੀ ਲਈ
ਪ੍ਰੇਰਣਾ
ਸਰੋਤ

ਸਰਦਾਰ
ਜੀ ਗੁੜ
(ਬਾਰਨ ਵਾਲੇ)

ਇੱਕ ਪਸੰਦੀਦਾ ਪੰਜਾਬੀ ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਵਿੱਚ ਜ਼ਮੀਨ ਬੈਠਾ ਕਰਕੇ ਜਾਂ ਰਹਿਣੇ ਕਰਕੇ ਪੱਛਮੀ ਦੇਸ਼ਾਂ ਦੇ ਡਾਲਰਾਂ ਦੀ ਚਕਾਚੌਂਧ ਦੇ ਲਾਲਚਵੱਸ ਹਰ ਗੈਰਕਾਨੂੰਨੀ ਰਕਬੇ ਵਰਤ ਕੇ ਪੱਛਮੀ ਮੁਲਕਾਂ ਵਿੱਚ ਦਾਖਿਲ ਹੋਣ ਦੀ ਹੋੜ ਲੱਗੀ ਹੋਈ ਹੈ ਅਤੇ ਲੋਨ ਦੀ ਵੱਡੀ ਰਕਮ ਏਜੰਟਾਂ ਕੋਲ ਲੁਟਾ ਡਿਪੋਰਟ ਹੋ ਕੇ ਬਰਬਾਦੀ ਦੇ ਰੋਣੇ ਰੋ ਰਹੇ ਹਨ, ਉੱਥੇ ਬਹੁਤ ਸਾਰੇ ਨੌਜਵਾਨ ਪੰਜਾਬ ਵਿੱਚ ਹੀ ਖੇਤੀ ਦੇ ਨਾਲ ਸਹਾਇਕ ਪੌਦਿਆਂ ਨੂੰ ਅਪਣਾ ਕੇ ਆਪਣੀ ਵਧੀਆ ਅਤੇ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਬਸਰ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ ਅਤੇ ਦੂਜਿਆਂ ਲਈ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਸਰੋਤ ਵੀ ਬਣ ਰਹੇ ਹਨ। 'ਹਿੰਮਤ ਕਰੋ ਇਨਸਾਨ ਤੋਂ ਕਿਆ ਕਾਮ ਹੈ ਮੁਸ਼ਕਿਲ...' ਦੇ ਧਾਰਨੀ ਉਹਨਾਂ ਉੱਦਮੀ, ਦ੍ਰਿੜ੍ਹ ਇਰਾਦੇ ਵਾਲੇ ਅਤੇ ਮਿਹਨਤੀ ਕਿਸਾਨਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਹਨ- ਪਿੰਡ ਬਾਰਨ, ਜ਼ਿਲ੍ਹਾ ਪਟਿਆਲਾ ਦੇ ਕਿਸਾਨ ਸ੍ਰ. ਜਸਵੰਤ ਸਿੰਘ ਦੇ ਪੁੱਤਰ ਗੁਰਮੁਖ ਸਿੰਘ ਅਤੇ ਹਰਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ।

ਇਹਨਾਂ ਦੋਵਾਂ ਭਰਾਵਾਂ ਰਵਾਇਤੀ ਖੇਤੀ ਤੋਂ ਹਟ ਕੇ ਨਵੀਂ ਤਕਨੀਕ ਨਾਲ ਖੇਤੀ ਕਰਨ ਦਾ ਫੈਸਲਾ ਲਿਆ ਅਤੇ ਖੇਤੀ ਦੇ ਨਾਲ-ਨਾਲ ਸਹਾਇਕ ਪੌਦੇ ਵਜੋਂ ਗਿਣਾਤਮਕ ਦੇ ਮੁਕਾਬਲੇ ਗੁਣਾਤਮਕ ਪੱਖੋਂ ਅਮੀਰ ਗੁੜ ਦੇ ਉਤਪਾਦਨ ਦੇ ਕੰਮ ਨੂੰ ਅਪਣਾ ਲਿਆ। ਉਹਨਾਂ ਨੇ ਹਿੰਮਤ ਨੂੰ ਯਾਰ ਬਣਾ ਕੇ ਪਟਿਆਲਾ-ਸਰਹਿੰਦ ਸੜਕ ਦੇ ਕਿਨਾਰੇ 2010-11 ਵਿੱਚ ਘੁਲਾੜੀ/ਵੇਲਾ ਲਗਾ ਕੇ ਆਰਗੈਨਿਕ ਰਨਿ ਤੇ ਗੁੜ/ਸ਼ੱਕਰ ਦਾ ਉਤਪਾਦਨ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਸੀ ਅਤੇ ਸੜਕ ਦੇ ਕਿਨਾਰੇ ਹੀ ਰੱਖ ਕੇ ਵੇਚਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ। ਅੱਜ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਇਸ 'ਸਰਦਾਰ ਜੀ ਗੁੜ ਵਾਲੇ' ਘੁਲਾੜੀ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਕੁਆਲਿਟੀ ਦੀ ਸ਼ੱਕਰ/ਗੁੜ ਲੈਣ ਲਈ ਲੋਕ ਦੂਰੋਂ-ਦੂਰੋਂ ਗੁੜ ਲੈਣ ਲਈ ਆਉਂਦੇ ਹਨ।

ਇਸ ਬਾਬਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਂਝੀ ਕਰਦਿਆਂ ਹਰਜਿੰਦਰ ਸਿੰਘ ਨੇ ਦੱਸਿਆ ਬਾਰਵੀਂ ਪਸ ਕਰਨ ਉਪਰੰਤ ਉਸਨੇ ਆਪਣੇ ਕਿੱਤੇ ਦੀ ਤਕਨੀਕੀ ਜਾਣਕਾਰੀ ਵਿੱਚ ਵਾਧਾ ਕਰਨ ਲਈ ਪੰਜਾਬ ਖੇਤੀਬਾੜੀ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਲੁਧਿਆਣਾ ਤੋਂ ਕਲਾਸਾਂ ਲਗਾ ਕੇ ਗੁੜ, ਸ਼ੱਕਰ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਮੁਹਾਰਤ ਹਾਸਲ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਚਾਹੇ ਇਸ ਕਿੱਤੇ ਵਿੱਚ ਮੁਹਾਰਤ ਲਈ ਰਸਮੀ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਲਈ ਹੈ, ਪਰ ਬਾਪੂ

ਤੋਂ ਉੱਪਰ ਕੋਈ ਯੂਨੀਵਰਸਿਟੀ ਨਹੀਂ ਹੈ। ਜਦੋਂ ਉਹਨਾਂ ਆਰਗੈਨਿਕ ਗੁੜ/ਸ਼ੱਕਰ ਦੇ ਉਤਪਾਦਨ ਨੂੰ ਸਹਾਇਕ ਪੌਦੇ ਵਜੋਂ ਅਪਣਾ ਕੇ ਇਹ ਕੰਮ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਸੀ ਤਾਂ ਉਸ ਸਮੇਂ ਉਹਨਾਂ ਨੇ 6 ਏਕੜ ਜ਼ਮੀਨ ਵਿੱਚ ਰੰਨਾ ਬੀਜਿਆ ਸੀ, ਪਰ ਗੁੜ ਸ਼ੱਕਰ ਦੀ ਕੁਆਲਿਟੀ ਵਧੀਆ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਵਿਕਰੀ ਵੀ ਵਧੀਆ ਰਹੀ। ਅਗਲੇ ਵਰ੍ਹੇ ਜਦੋਂ ਨਵੰਬਰ ਮਹੀਨੇ ਰਨਿ ਤੋਂ ਗੁੜ ਤਿਆਰ ਕਰਨ ਲਈ ਕੰਮ ਸ਼ੁਰੂ ਕੀਤਾ ਤਾਂ ਕੁਆਲਿਟੀ ਵਧੀਆ ਹੋਣ ਕਾਰਨ ਸ਼ੁਰੂਆਤ ਵਿੱਚ ਹੀ ਲੋਕਾਂ ਵੱਲੋਂ ਗੁੜ ਦੀ ਮੰਗ ਵਧ ਗਈ, ਸੋ ਸਾਨੂੰ ਦੇਰ ਰਾਤ ਤੱਕ ਮੁਸ਼ੱਕਤ ਕਰਨੀ ਪੈਂਦੀ ਸੀ, ਪਰ ਇਸ ਨਾਲ ਸਾਡੇ ਹੌਸਲੇ ਜ਼ਰੂਰ ਬੁਲੰਦ ਹੋਏ ਅਤੇ ਇਸਨੂੰ

ਅਤੇ ਗੁੜ ਬਣਾਉਣ ਵਿੱਚ ਇਸਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕਰਦੇ ਹਨ। ਰਨਿ ਦੀ ਕਿਸਮ ਬਾਰੇ ਉਨ੍ਹਾਂ ਜਾਣਕਾਰੀ ਸਾਂਝੀ ਕਰਦਿਆਂ ਕਿਹਾ ਕਿ ਕਿਸਮ 18, ਕਿਸਮ 85 ਅਤੇ ਪੌਡਾ ਕਿਸਮ ਦਾ ਰੰਨਾ ਕਾਸ਼ਤ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ। ਰਨਿ ਉੱਪਰ ਵੀ ਕਿਸੇ ਕਿਸਮ ਦੀ ਪੈਸਟੀਸਾਈਡ ਦਾ ਛਿੜਕਾਅ ਨਹੀਂ ਕੀਤਾ ਜਾਂਦਾ, ਬਲਕਿ ਰੂੜੀ ਦੀ ਦੇਸੀ ਖਾਦ ਦੀ ਵਰਤੋਂ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ। ਉਹਨਾਂ ਦੀ ਘੁਲਾੜੀ ਤੋਂ ਵਧੀਆ ਗੁੜ, ਸ਼ੱਕਰ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਗਾਜਰ ਵਾਲਾ ਗੁੜ, ਹਲਦੀ ਵਾਲਾ ਗੁੜ, ਡਰਾਈ ਫਰੂਟ ਵਾਲਾ ਗੁੜ ਵੀ ਉਪਲਬਧ ਮਿਲਦਾ ਹੈ। ਹੁਣ ਗਾਹਕਾਂ ਦੀ ਮੰਗ ਉਹਨਾਂ ਸਰੋਂ ਦੇ ਤੇਲ, ਹਲਦੀ ਅਤੇ ਦੇਸੀ ਖੰਡ ਵੀ ਬਣਾਉਣਾ ਸ਼ੁਰੂ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ। ਕਿਸਾਨ ਭਰਾਵਾਂ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਹਰ ਕੰਮ ਮਿਹਨਤ, ਸੂਝ, ਜ਼ਿੱਦ, ਸਹਿਣਸ਼ੀਲਤਾ ਅਤੇ ਰੋਚਕਤਾ ਮੰਗਦਾ ਹੈ।

'ਹਿੰਮਤ ਅੱਗੇ ਲੱਛਮੀ, ਪੱਖੇ ਅੱਗੇ ਪੈਣ...' ਦੇ ਧਾਰਨੀ ਬਣਨ ਦੀ ਲੋੜ ਹੁੰਦੀ ਹੈ। ਇਕ ਚੰਗਾ ਵਿਅਕਤੀ, ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਕੰਮ ਕਰਨ ਦਾ ਜਜ਼ਬਾ ਹੋਵੇ, ਸਿੱਖਣ ਦੀ ਕਲਾ ਹੋਵੇ ਅਤੇ ਸਮੇਂ ਦੀ ਕਦਰ ਜਾਣਦਾ ਹੋਵੇ, ਅਜਿਹਾ ਇਨਸਾਨ ਦੇਰ ਨਾਲ ਹੀ ਸਹੀ ਪਰ ਸਫਲਤਾ ਜ਼ਰੂਰ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਦਾ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਆਪਣੇ ਕੰਮ ਨੂੰ ਸਮਰਪਿਤ ਹਾਂ ਅਤੇ ਸਾਡਾ ਤਾਂ ਇੱਥੇ ਹੀ ਅਮਰੀਕਾ, ਕੈਨੇਡਾ ਹੈ। ਅਸੀਂ ਤਾਂ ਹਿੰਮਤ ਨੂੰ ਯਾਰ ਬਣਾਇਆ ਹੋਇਆ ਹੈ, ਨਾ ਸਾਨੂੰ ਏਜੰਟਾਂ ਹੱਥੋਂ ਲੁਟੇ ਜਾਣ ਦਾ ਦੁੱਖ ਹੈ ਅਤੇ ਨਾ ਹੀ ਡਿਪੋਰਟ ਹੋਣ ਦਾ ਡਰ। ਹੁਣ ਘੁਲਾੜੀ ਨਵੰਬਰ ਮਹੀਨੇ ਤੋਂ ਸ਼ੁਰੂ ਹੋ ਕੇ ਅਪ੍ਰੈਲ ਦੇ ਪਹਿਲੇ ਹਫ਼ਤੇ ਤੱਕ ਚਲਦੀ ਹੈ। ਸਾਡਾ ਸਾਰਾ ਪਰਿਵਾਰ ਸਾਰਥਕ ਸੋਚ ਅਪਣਾ ਕੇ ਇਸ ਕੰਮ ਵਿੱਚ ਹੱਥ ਵਟਾਉਣ ਤੋਂ ਸੰਕੋਚ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ। ਨੌਜਵਾਨਾਂ ਨੂੰ ਸੁਨੇਹਾ ਦਿੰਦਿਆਂ ਉਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਨਵੀਆਂ ਤਕਨੀਕਾਂ ਨਾਲ ਰਵਾਇਤੀ ਤਰੀਕਿਆਂ ਅਤੇ ਫ਼ਸਲਾਂ ਦੇ ਬਦਲਾਅ ਨਾਲ ਖੇਤੀ ਫਾਇਦੇਮੰਦ ਧੰਦਾ ਹੈ। ਵਿਦੇਸ਼ੀ ਭੱਜਣ ਨਾਲੋਂ ਗੁਰੂਆਂ ਦੀ ਇਸ ਪੰਜਾਬ ਦੀ ਧਰਤੀ ਤੇ ਮਿਹਨਤ ਨਾਲ ਖੇਤੀ ਕਰਕੇ ਵੀ ਖੁਸ਼ਹਾਲ ਬਣਿਆ ਜਾ ਸਕਦਾ ਹੈ।

ਉਹਨਾਂ ਦਾ ਕਹਿਣਾ ਹੈ ਕਿ ਉਹ ਭਿੰਡੀਆਂ ਦੀ ਬਿਜਾਈ ਵੀ ਅਪ ਹੀ ਕਰਦੇ ਹਨ

ਇਜ਼ੀ. ਸਤਨਾਮ ਸਿੰਘ ਮੱਟੂ, ਬੀਬੜ ਸੰਗਰੂਰ (ਮੋ. 97797-08257



ਕਿਸਾਨ ਮੇਲਿਆਂ ਦੌਰਾਨ ਕਿਸਾਨ ਵੀਰਾਂ ਦੇ ਉਤਸ਼ਾਹ ਨੂੰ ਵੇਖਦਿਆਂ

ਖੇਤੀ ਦੁਨੀਆਂ

ਵੱਲੋਂ ਪੁਰਾਣੇ ਅਤੇ ਨਵੇਂ ਮੈਂਬਰਾਂ ਲਈ

ਵਿਸ਼ੇਸ਼ ਫੂਟ

ਇੱਕ ਸਾਲ ਲਈ

250/-
ਰੁਪਏ

ਦੋ ਸਾਲ ਲਈ 450/- ਰੁਪਏ

ਤਿੰਨ ਸਾਲ ਲਈ 650/- ਰੁਪਏ

ਮੈਂਬਰ ਬਣਨ ਤੋਂ ਬਾਅਦ ਵੱਟਸਐਪ ਰਾਹੀਂ ਸਰਵਿਸ ਮੁਫ਼ਤ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰੋ।

ਵਟਸਐਪ ਰਾਹੀਂ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨ ਲਈ
ਸਾਲਾਨਾ ਚੰਦਾ
ਸਿਰਫ 100/-* ਰੁਪਏ

KHETI DUNIYAN
TID - 62763351



ਚੰਦੇ ਭਰਨ ਲਈ QR ਕੋਡ ਸਕੈਨ ਕਰੋ।

ਵਧੇਰੇ ਜਾਣਕਾਰੀ ਲਈ 'ਤੇ ਸੰਪਰਕ ਕਰੋ :

ਮੋ. 90410-14575

Website : www.khetiduniyan.in
E-mail : khetiduniyan1983@gmail.com

* ਇਹ ਸਕੀਮ 30 ਅਪ੍ਰੈਲ, 2026 ਤੱਕ ਹੈ।